www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 17 | गोरखपुर | 22 अक्टूबर 2023 | पृष्ठ : 08 | मूल्य: 2/–

नवरात्रि का पर्व नारी के सम्मान का प्रतीक है। नौ दिनों तक नवदुर्गा के नौ स्वरूपों की उपासना होती है। कहते हैं कि जिस घर में माता की पूजा होता है, वह सुख–समृद्धि बनी रहती है। देवी पूजा महज माता की प्रतिमा की पूजा मात्र नहीं है, बल्कि यह पर्व मां, बहन, बेटी और समाज की हर नारी के सम्मान का पर्व है। ऐसे में सिर्फ कन्या पूजन ही नहीं, महिलाओं का भी सम्मान करें। अगर आप देवी पूजा करते हैं तो महज नवरात्रि के मौके पर नहीं बल्कि महिलाओं के प्रति आदर सदैव बनाए रखें। इन नवरात्रि देवी के सामने महिला सम्मान का संकल्प लें और अपने आचरण में कुछ बदलाव लाएं, ताकि मां, बेटी और समाज की हर नारी सुरक्षित व सम्मानित महसूस कर सके। आज जब सभी देशवासी भारत की संस्कृति का गौरवमय त्यौहार कन्या पूजन करने की तैयारी में हैं तो उनसे यह निवेदन और प्रश्न भी है कि आखिर जहां कन्या की सम्मानजनक स्थिति बने रहे, ऐसा समाज बनाने के लिए क्यों कुछ नहीं करते?

कन्या–पूजन नहीं बेटियों के प्रति दृष्टिकोण बदलने की जरूरत

नवरात्रि एक हिंदू पर्व है। नवरात्रि एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'नौ रातें'। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों – महालक्ष्मी, महासरस्वती या सरस्वती और दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा होती है जिन्हें नवदुर्गा कहते हैं। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। भारतीय नारीवादियों और आधुनिक भारतीय महिलाओं ने इस परित्यक्त देवी प्रतीकवाद पर सवाल उठाना शुरू कर दिया है क्योंकि इसे पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के एक सक्रिय उपकरण के रूप में भी इस्तेमाल किया गया है। अन्य संस्कृतियों और पौराणिक कथाओं में भी कुछ सबसे प्रमुख देवी माताएँ रही हैं और आदर्श मातृत्व के जीवन के प्रतीक हैं – उदाहरण के लिए, मिस्र के आइसिस, ग्रीक डेमेटर या कैथोलिक धर्म में, मैरीयीशु की माँ के रूप में। लेकिन किसी अन्य संस्कृति में छोटी लड़कियों को देवी के रूप में नहीं पूजा जाता जैसा कि भारत में किया जाता है। कई पश्चिमी नारीवादी और विश्व स्तर पर बहुत सारी महिलाएं हिंदू देवी–देवताओं को प्रेरणादायक और आंतरिक शक्ति प्रदान करने वाली मानती हैं।

नवरात्रों में भारत में कन्याओं को देवी तुल्य मानकर पूजा जाता है। पर कुछ लोग नवरात्रि के बाद यह सब भूल जाते हैं। कई जगह कन्याओं का शोषण होता है और उनका अपमान किया जाता है। नवरात्रि के आठवें और/या नौवें दिन जिन छोटी–छोटी पूर्व–यौवन लड़कियों की पूजा की जाती है, उनके साथ अक्सर दुर्व्यवहार और भेदभाव किया जाता है। ऐसे कई देवी मंदिर हैं जहां रजस्वला महिलाओं या कथित निचली जाति की महिलाओं को प्रवेश करने की भी मनाही है, देवी के बहुत सारे पूजा स्थल हैं जहां केवल पुरुषों को आंतरिक गर्भगृह में जाने की अनुमति है और महिलाओं को नहीं। नवरात्रि के आठवें और/या नौवें दिन कंजक या कन्या के रूप में पूजी जाने वाली छोटी पूर्व–यौवन लड़कियों को अक्सर बाकी दिनों के लिए लड़कियों के रूप में जन्म लेने के लिए गाली दी जाती है, उनके साथ भेदभाव किया जाता है और उन्हें 'अपवित्र' माना जाता है। मासिक धर्म शुरू होने के बाद उनकी पूजा की जानी चाहिए। आज भी भारत में बहूत सारे गांवों में कन्या के जन्म पर दुःख मनाया जाता है। कन्याओं और महिलाओं के प्रति हमें अपनी सोच बदलनी पड़ेगी। देवी तुल्य कन्याओं का सम्मान करें। इनका आदर करना ईश्वर की पूजा करने जितना ही पुण्य प्राप्त होता है। शास्त्रों में भी लिखा है कि जिस घर में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है वहां भगवान खुद वास करते हैं।

बदलते दौर में देवी की समकालीन समझ की आवश्यकता है, यह देवी की अवधारणा में विविधता लाने का समय है। कुछ साल पहले, टैप रूट इंडिया ने एक अभियान विकसित किया जिसमें तीन मुख्य हिंदू देवियों – दुर्गा, सरस्वती, और लक्ष्मी की छवियों को प्रस्तुत किया गया था, लेकिन उनके चेहरे पर चोट और चोट के निशान थे जो महिलाओं के खिलाफ हिंसा का संकेत देते थे। अब समय आ गया है, हो सकता है कि देवी से संबंधित इन सभी प्रतीकों को वर्तमान वातावरण के अनुरूप फिर से कल्पना करने की आवश्यकता हो और छाती ठोकने वाली "जय माता दी, माता की जय" की देवी पूजा को यदि प्रतिस्थापित नहीं किया जाता है तो इसका लड़कियों और महिलाओं के लिए एक सुरक्षित और अधिक सम्मान करने की आवश्यकता है। आज जब सभी देशवासी भारत की संस्कृति का गौरवमय त्यौहार कन्या पूजन करने की तैयारी में हैं तो उनसे यह निवेदन और प्रश्न भी है कि आखिर जहां कन्या की सम्मानजनक स्थिति बने रहे, ऐसा समाज बनाने के लिए क्यों कुछ नहीं करते? केवल पुलिस के डंडों से नैतिकता नहीं संवरती, उसके लिए नैतिक प्रयास भी करने होंगे। इसके साथ ही आर क्षण द्वारा कुछ महिलाओं को पंचायत, निगमों या भविष्य में संसद या विधानसभाओं में भेजने पर भी महिलाएं तब तक सशक्त नहीं हो सकतीं, जब तक समाज में स्वस्थ वातावरण नहीं होगा।

बहुत से घरों में लड़कियों को वह स्थान और सम्मान नहीं जो परिवार के बेटों को है। हमारे समाज के कुछ प्रमुख व्यक्ति और राजनीतिक नेता भी केवल कागजी भाषण देने में तो शेर है, पर घर के अंदर प्रवेश करते ही या भूल जाते हैं कि बाहर महिला अधिकार के लिए क्या–क्या भाषण देकर आए हैं? कितना अफसोस है कि जो संविधान महिला को राष्ट्रपति बना सकता है वह किसी मंदिर की मुखिया नहीं बना सकता। आज भी कुछ मंदिर ऐसे हैं जहाँ महिलाओं को प्रवेश नहीं करने दिया जाता। परिवार के मुखिया पुरुष की मृत्यु के समय पगड़ी बेटियों के सिर पर रख दी जाती है। जब महिला की मृत्यु होती है उसकी बेटियां या बहू ऐसा अधिकार नहीं रखती जो बेटे या पति को रहता है। बहुत से समुदाय में तो बिरादरी में बाँधी जा रही पगड़ी को महिलाएं हाथ भी नहीं लगा सकती। देश के समाचार पत्रों में, टीवी चैनलों की खबरों के बुलेटिन के साथ एक दिन भी ऐसा नहीं जाता जब देश के किसी न किसी भाग में बालिग अथवा नाबालिग के साथ दुराचार का समाचार न मिले। समाचार मिलता है कि एक युवती का अपहरण हुआ और कार में ही उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म के बाद सड़क पर फेंक गए। इन समाचारों के अधिक उदाहरण देना आवश्यक नहीं, क्योंकि दुर्भाग्य से हमें प्रतिदिन यही सुनना और देखना पड़ता है।

कन्या पूजन के साथ हमें यह संकल्प लेना होगा कि जिस लड़की की हम पूजा कर रहे हैं मंदिर की पुजारी क्यों नहीं बन सकती? कम से कम जो देवियों के मंदिर है वहां की पूजा तो महिलाएं करें। इसमें तर्क भी है समाज सोचे तो सही? मंदिर के अध्यक्ष क्यों नहीं बन सकती? ढोलक बजा सकती है, लंगर पका सकती है। लेकिन कुछ विशेष मंदिरों में उसी देव मूर्ति के दर्शन नहीं कर सकती जिनके गीत गाकर वो गला फाड़ लेती है या उनके लिए खाना बना कर भोग लगाती है। याद रखना होगा कि समाज को तो मानसिकता बदलनी है ही पर पहले महिलाओं को मानसिकता बदलनी होगी। नवरात्रि का पर्व नारी के सम्मान का प्रतीक है। नौ दिनों तक नवदुर्गा के नौ स्वरूपों की उपासना होती है। कहते हैं कि जिस घर में माता की पूजा होता है, वह सुख–समृद्धि बनी रहती है। देवी पूजा महज माता की प्रतिमा की पूजा मात्र नहीं है, बल्कि यह पर्व मां, बहन, बेटी और समाज की हर नारी के सम्मान का पर्व है। ऐसे में सिर्फ कन्या पूजन ही नहीं, महिलाओं का भी सम्मान करें। अगर आप देवी पूजा करते हैं तो महज नवरात्रि के मौके पर नहीं बल्कि महिलाओं के प्रति आदर सदैव बनाए रखें। इन नवरात्रि देवी के सामने महिला सम्मान का संकल्प लें और अपने आचरण में कुछ बदलाव लाएं, ताकि मां, बेटी और समाज की हर नारी सुरक्षित व सम्मानित महसूस कर सके।

–प्रियंका सौरभ

जम्मू–कश्मीर में चुनाव की मांग

करते हुए भाजपा पर बरसे उमर अब्दुल्ला

• दफन हो रहा लोकतंत्र

जम्मू–कश्मीर। जम्मू–कश्मीर के विपक्षी दल लगातार केंद्रशासित प्रदेश में चुनाव कराने की मांग कर रहे हैं। इसको लेकर उनके निशाने पर भाजपा है। आज एक बार फिर से जम्मू–कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने केंद्र शासित प्रदेश में चुनाव कराने के मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि लोग पीड़ित हैं क्योंकि उन्हें निर्वाचित सरकार के उनके अधिकार से वंचित किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जनता का गुस्सा बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज जब हमें लगभग हर रोज बताया जाता है कि स्थिति में काफी सुधार हुआ है। यह सामान्य के करीब है... मेरा मानना है कि, दुर्भाग्य से, जम्मू और कश्मीर वह जगह है जहां भारत में लो. कतंत्र दफन होने जा रहा है।

इस बीच जम्मू–कश्मीर में चुनाव के मुद्दे पर डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आज़ाद पार्टी के प्रमुख गुलाम नबी आज़ाद ने भी कहा कि हमने हर जगह यही मांग की है कि चुनाव यहां जरूरी हैं...विधानसभा के चुनाव होने चाहिए। वहीं, उमर अब्दुल्ला ने स्मार्ट मीटर की स्थापना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि लगभग हर चीज़ लोगों को बाहर आने के लिए उकसाती है क्योंकि 5 अगस्त, 2019 के बाद जिस तरह से चीजें हुई हैं, उसे लेकर एक तरह का आक्रोश है। और यह कश्मीर की तुलना में जम्मू में अधिक दिखाई देता है।

पूर्ववर्ती राज्य जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को 5 अगस्त, 2019 को निरस्त कर दिया गया और दो केंद्र शासित प्रदेश – जम्मू और कश्मीर और लद्दाख – बनाए गए।

अब्दुल्ला ने कहा कि चुनाव न कराने का एक कारण यह भी है कि बीजेपी को डर है कि उसे अनुकूल नतीजे नहीं मिलेंगे। उन्होंने कहा कि मैं केवल अनुमान लगा सकता हूं लेकिन एकमात्र निष्कर्ष जो मैं निकाल सकता हूं वह यह है कि भाजपा डरी हुई है कि नतीजे क्या होंगे। वे संसदीय चुनाव में अपनी संभावनाओं को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। अब्दुल्ला ने केंद्र से कहा कि "यह कहने का साहस रखें कि स्थिति 2019 से पहले की तुलना में बदतर है"।

दिल्ली हाई कोर्ट की प्रवर्तन निदेशालय को लेकर अहम टिप्पणी

धारा 50 के तहत समन जारी करने का अधिकार, गिरफ्तारी का नहीं

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने गुरुवार को कहा कि धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) की धारा 50 के तहत समन जारी करने की प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की शक्ति में किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करने की शक्ति शामिल नहीं है और कहा कि दोनों अलग और विशिष्ट हैं। न्यायमूर्ति अनूप जयराम भंभानी की एकल न्यायाधीश पीठ ने यह भी कहा कि पीएमएलए की धारा 19 के तहत गिरफ्तारी की शक्ति अनियंत्रित नहीं है और अधिकारियों के पास अपनी इच्छा और इच्छानुसार गिरफ्तारी की शक्ति नहीं है।

पीठ ने कहा कि पीएमएलए की धारा 50 के तहत, ईडी अधिकारियों को शपथ पर दर्ज करने के लिए किसी भी व्यक्ति की उपस्थिति को लागू करने की शक्ति है। इस आदेश के साथ कि किसी भी व्यक्ति को बुलाया जाएगा, वह उपस्थित होने, जवाब देने और सच्चाई से बयान देने के लिए बाध्य होगा।

उनके पास दस्तावेज़ों और अभिलेखों की खोज, निरीक्षण और उत्पादन के लिए बाध्य करने की भी शक्ति है और लिखित में कारण बताकर रिकॉर्ड जब्त करने और बनाए रखने के लिए कहा, अदालत ने कहा। न्यायमूर्ति भंभानी ने कहा कि निश्चित रूप से, गिरफ्तारी की शक्ति पीएमएलए की धारा 50 में स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है। हालांकि, पीठ ने कहा, पीएमएलए की धारा 19 नामित ईडी अधिकारियों को गिरफ्तारी की शक्ति प्रदान करती है।

यह स्पष्ट है कि गिरफ्तारी की शक्ति धारा 50 में नहीं है और न ही यह धारा 50 के तहत जारी किए गए सम्मन के स्वाभाविक परिणाम के रूप में उत्पन्न होती है। हाई कोर्ट ने रेखांकित किया कि धारा 50 पीएमएलए के तहत समन जारी करने की शक्ति धारा 19 पीएमएलए के तहत गिरफ्तारी की शक्ति से अलग और अलग है।

हाई कोर्ट ने कहा कि एक के अधीन शक्तियों के प्रयोग को इस आशंका से रोका नहीं जा सकता कि इससे दूसरे के अधीन शक्तियों का प्रयोग हो सकता है। यदि इसकी अनुमति दी जाती है, तो पीएमएलए की धारा 50 के तहत बुलाया गया कोई भी व्यक्ति... पीएमएलए की धारा 19 के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केवल यह आशंका व्यक्त करते हुए ऐसे समन का विरोध कर सकता है कि उसे ईडी के हाथों गिरफ्तारी का सामना करना पड़ सकता है।

ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था, उन्नत तकनीक वाली औद्योगिक नीति का प्रस्ताव तैयार

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने उन्नत औद्योगिक विकास एवं सेवा क्षेत्र के जरिये ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था बनाने और राष्ट्रीय राजधानी को '24 घंटे सक्रिय रहने वाला शहर' बनाने के लिए 'औद्योगिक और आर्थिक विकास नीति 2023–33' का प्रस्ताव रखा है। उद्योग विभाग के अधिकारियों ने शनिवार को कहा कि प्रस्तावित नीति के श्वेत पत्र पर हितधारकों से 20 नवंबर तक सुझाव मांगे गए हैं। इस नीति में रात्रिकालीन अर्थव्यवस्था, 'प्लग–एंड–प्ले' सुविधाओं, स्टार्टअप और नई आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देकर दिल्ली को विश्वस्तर पर प्रतिस्पर्धी शहरी अर्थव्यवस्था बनाने की परिकल्पना की गई है। श्वेत पत्र में कहा गया है कि इस नीति के माध्यम से सरकार का मिशन सेवा क्षेत्र और ज्ञान–आधारित

अर्थव्यवस्था, उन्नत औद्योगिक एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा देना होगा। इसमें कहा गया है कि एक जवाबदेह शासन तंत्र बनाते हुए नीतिगत उद्देश्यों को समयबद्ध और पारदर्शी तरीके से लागू किया जाएगा। यह नीति अधिसूचना जारी होने के बाद 10 साल तक लागू रहेगी। श्वेत–पत्र में कहा गया, "दिल्ली में '24–घंटे सक्रिय रहने वाले शहर' की अवधारणा को मॉडल दुकानों और प्रतिष्ठानों (रोजगार और सेवाओं की शर्तों का विनियमन) अधिनियम 2015 के माध्यम से बढ़ावा दिया जाएगा। इसके साथ ही रात्रिकालीनअर्थव्यवस्था से संबंधित नीति तैयार की जाएगी।" रात्रिकालीन अर्थव्यवस्था के तहत कारोबार, मौजमस्ती, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ भोजन, पेय पदार्थ और मनोरंजन–केंद्रित मुख्य गतिविधियां जैसे रेस्तरां, कैफे, पब, बार, थिएटर, संगीत, त्यौहार, बाजार और सजीव संगीत प्रस्तुतियां शामिल होंगी। इसमें कहा गया, "पिछले कुछ साल से उद्योग विभाग दिल्ली में नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर रहा है। हाल ही में शुरू की गई स्टार्टअप नीति का लक्ष्य दिल्ली को भारत और दुनिया भर में शीर्ष स्टार्टअप स्थलों में से एक के रूप में स्थापित करना है।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह संपन्न

महात्मा गांधी के मार्गदर्शन पर चलने की विद्यार्थियो से की अपील

मोतिहारी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गत दिनों (19 अक्टूबर, 2023) मोतिहारी, बिहार में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में भाग लिया और इसे संबोधित किया। छात्रों को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि वे महात्मा गांधी द्वारा भारत में किए गए पहले सत्याग्रह की स्मृति में स्थापित विश्वविद्यालय के छात्र हैं। इस विश्वविद्यालय के छात्र होने के नाते, वे एक अमूल्य विरासत से जुड़े हुए हैं, जिसका सम्मान पूरी दुनिया में किया जाता है। राष्ट्रपति ने कहा कि गांधीजी की विरासत को समझने और आत्मसात करने के लिए सादगी और सच्चाई के अच्छे परिणामों को समझना होगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सादगी और सच्चाई का मार्ग ही वास्तविक सुख, शांति और प्रसिद्धि का मार्ग है।

उन्होंने विद्यार्थियों से बापू की शिक्षाओं के अनुसार मन, वाणी और कर्म से सदैव सत्य के मार्ग पर चलने का संकल्प लेने का आग्रह किया। राष्ट्रपति ने कहा कि गांधीजी ने अहिंसा, करुणा, नैतिकता और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में लोगों का विश्वास बढ़ाया। उन्होंने हमारे समाज, राजनीति और अध्यात्म को भारतीयता के साथ बहुत गहराई से जोड़ा। विश्व समुदाय में अनेक लोग गांधीजी में भारत का मूर्त रूप देखते हैं। राष्ट्रपति ने बताया कि ऐतिहासिक चंपारण सत्याग्रह का समाज के ताने–बाने पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। उस आंदोलन के दौरान सभी लोग जातिगत भेदभाव को किनारे र खकर एक–दूसरे के साथ खाना बनाने और खाने लगे। उन्होंने कहा कि करीब 106 साल पहले गांधी जी के कहने पर चंपारण के लोगों ने सामाजिक समानता और एकता का मार्ग अपनाया और अंग्रेजी हुकूमत को झुकने पर मजबूर कर दिया। आज भी सामाजिक समानता और एकता का वही मार्ग हमें आधुनिक और विकसित भारत के पथ पर आगे ले जाएगा।

आने वाला है चक्रवात 'तेज'

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने चक्रवात के संबंध में शुक्रवार को बताया कि दक्षिण पूर्व और दक्षिण पश्चिम अरब सागर के ऊपर दबाव का क्षेत्र बना है। इससे 21 अक्टूबर की सुबह तक चक्रवाती तूफान बन जाएगा।

अरब सागर से चले चक्रवात 'तेज' के कारण मौसम विभाग अलर्ट पर आ गया है। भारतीय मौसम विभाग ने अरब सागर में विकसित होने वाले इस संभावित तूफान के मद्देनजर महाराष्ट्र शहर में मौसम परिवर्तन को लेकर भी चेतावनी जारी की है। मौसम विभाग ने मौसम का अपडेट भी किया है, जिसमें संभावना जताई गई है ये चक्रवात कई शहरों को प्रभावित कर सकता है। तूफान के कारण महाराष्ट्र और खास तौर से मुंबई के लिए चेतावनी जारी हुई है।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने चक्रवात के संबंध में शुक्रवार को बताया कि दक्षिण पूर्व और दक्षिण पश्चिम अरब सागर के ऊपर दबाव का क्षेत्र बना है। इससे 21 अक्टूबर की सुबह तक चक्रवाती तूफान बन जाएगा। बता दें कि इस वर्ष अरब सागर में बनने वाला ये दूसरा तूफान है। इस तूफान को तेज नाम दिया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक चक्रवाती तूफान के रविवार को गंभीर तूफान में बदलने का अनुमान है।

इस चक्रवाती तूफान को लेकर आईएमडी ने एक और अपडेट दिया है जिसके मुताबिक अरब सागर में उठ रहा ये तूफान गुजरात पर कोई असर नहीं करेगा। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यहां यह जानकारी दी। हालांकि मौसम विभाग ने संभावना जताई है कि तूफान आने वाले दिनों में भयंकर तूफान का रूप ले सकता है। संभवतः रविवार तक तूफान भयंकर रूप में आ जाएगा। ओमान के दक्षिणी तटों एवं निकटवर्ती यमन की ओर बढ़ सकता है। हालांकि कभी–कभी चक्रवात अपना रास्ता बदल भी लेते हैं। यहां मौसम विज्ञान केंद्र की निदेशक मनोरमा मोहंती ने कहा, '' 22 अक्टूबर की शाम तक इसके भयंकर चक्रवाती तूफान का शक्ल लेने तथा दक्षिणी ओमान एवं यमन तट की ओर बढ़ने की आशंका है।'' उन्होंने कहा, ''चुंकि चक्रवात पश्चिम–उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बढ़ेगा, ऐसे में उसका गुजरात (जो पश्चिम में है) पर कोई असर नहीं पड़ सकता है। अगले सात दिनों तक गुजरात में मौसम शुष्क रहेगा।'' राज्य के राहत आयुक्त आलोक कुमार पांडे ने कहा कि फिलहाल कोई खतरा नहीं है। जून में अरब सागर से उठे बिपरजॉय तूफान ने गुजरात में कच्छ तथा सौराष्ट्र के कई क्षेत्रों में भयंकर तबाही मचायी थी। पहले यह पश्चिम की ओर बढ़ रहा था लेकिन बाद में उसने दिशा बदली तथा कच्छ तट से जा टकराया।

मैसूरू में विजया दषमी की तैयारियां जोरों पर

कैश फॉर क्वेरी में भारी भ्रष्टाचार की बदबू ..!

टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा के 'कैश फॉर क्वैरी' विवाद पर टीएमसी घिर चुकि है। इस मामले में उद्योगपति गौतम अडानी का बयान आया है।तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा पर कथित रूप से एक बड़े उद्यमी के इशारे पर लोकसभा में सवाल पूछने पर उनके खिलाफ भाजपा के एक वरिष्ठ सांसद की ओर से जांच की मांग का मुद्दा तूल पकड़ता जा रहा है और अडानी समूह ने एक बयान में इस घटनाक्रम को चौंकाने वाला बताया है। गौतम अडानी के नेतृत्व वाले अडानी समूह ने सोमवार को अहमदाबाद से जारी एक बयान में कहा कि इस घटनाक्रम से उसके नौ अक्टूबर के बयान की पुष्टि होती है कि कुछ समूह और व्यक्ति अडानी समूह की प्रतिष्ठा उसके नाम और बाजार में उसकी स्थिति को क्षति पहुंचाने के लिए दिन–रात एक किए हुए हैं। अडानी व्यापार समूह के तरफ से बयान में कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट के वकील जय अनंत देहराद्रि की ओर से केन्द्रीय जांच ब्यूरो के पास शिकायत देकर तृणमूल सांसद मोइत्रा के खिलाफ कहा है कि सांसद और हीरानंदानी समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दर्शन हीरानंदानी ने गौतम अडानी और उनकी कंपनियों के समूह पर निशाना साधने के लिए एक बड़ा आपराधिक षड्यंत्र किया है! अडानी समूह ने वकील की शिकायत के हवाले से कहा है कि मोइत्रा को इसके लिए हीरानंदानी से 'घूस' और अन्य फायदे मिले हैं। शिकायत में मोइत्रा को निलंबित कर इस मामले की जांच की मांग की गयी है। अडानी समूह के प्रवक्ता ने कहा , " समूह यह बयान अपने हितधारकों के हक में जारी कर रहा है जिसमें हमारे शेयरधारक भी शामिल हैं।

टीएमसी सांसद मोइत्रा पर अडानी समूह ने बड़ा इल्जाम लगाया है। मोइत्रा ने अडानी समूह के खिलाफ कई पोस्ट में कहा है कि वह एक और प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बतायें कि जब उसने विदेश से कोयले के आयात का मूल्य 13 हजार करोड़ रुपए बढ़ाकर दिखाने के लिए चीन और संयुक्त अरब अमीरात के दो नागरिकों और तीन विदेशी कंपनियों का इस्तेमाल किया तो क्या वह राष्ट्रहित में था। उन्होंने अडानी समूह से यह भी पूछा है कि धामरा एलएनजी अनुबंध में जब उन्होंने इंडियन ऑयल और गेल के साथ 46 हजार पांच सौ रुपये की हेराफेरी की तो क्या वह राष्ट्रहित में था? सासंद महुआ मोइत्रा ने एक अलग ट्वीट में कल सीबीआई से कहा था कि वह पहले अडानी समूह के विदेशों से आये बेनामी धन और आयात मूल्य ऊंचा दिखाने और बेनामी खातों की जांच कर ले तो उनके खिलाफ जांच करे।अपने विवादित बयानों के लिए हमेशा सुर्खियों में रहने वाले गोड्डा (झारखंड) से लोक सभा के भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला से मांग की है कि टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा को निलंबित किया जाए और एक कमेटी से उनके उपर लगाए गए आरोपों की जांच कराई जाए! दरअसल भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा पर आरोप लगाते हुए लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला को लिखी चिट्ठी लिखी है जिसमें दुबे का आरोप है कि महुआ मोइत्रा को सदन में सवाल पूछने के लिए बिजनेसमैन दर्शन हीरानंदानी से गिफ्ट और कैश मिला था! इसलिए इस मामले की जांच के लिए कमेटी बनाई जाए और महुआ मोइत्रा को सदन से निलंबित किया जाए। निशिकांत ने स्पीकर को 'री–इमरजेंस ऑफ नेस्टी कैश फॉर क्वेरी इन पार्लियामेंट' टाइटल से चिट्ठी लिखी है। इसमें विशेषाधिकारों के गंभीर उल्लंघन, सदन के अपमान और आईपीसी की धारा 120। के तहत आपराधिक केस की बात कही है। सदन हाल में महुआ मोइत्रा ने संसद में कुल 61 में से करीब 50 प्रश्न पूछे। इनमें दर्शन हीरानंदानी और उनकी कंपनी के व्यावसायिक हितों की रक्षा करने या उन्हें कायम रखने के इरादे से जानकारी मांगी गई थी!

पंकज कुमार मिश्रा,
जौनपुर यूपी

सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला अजन्मे बच्चे के अधिकारों की रक्षा,

आधुनिक समय में भ्रूणों और विशेषतः कन्याभ्रूणों की हत्या का सिलसिला बढ़ता जा रहा है। जबकि भारतीय संस्कृति में मां की ममता का एक रूप तो वह था, जिसमें वह अपने विकलांग, विक्षिप्त और बीमार बच्चे का आखरी सांस तक पालन करती थी।

सुप्रीम कोर्ट की चौखट पर कभी–कभी नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से जुड़े मुद्दे भी विचाराधीन आते हैं, भारतीय न्यायालय की विशेषता रही है कि वह ऐसे मामलों को गंभीरता से लेते हुए अनूठे फैसले लेकर मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को मजबूती दी है। ऐसे ही एक मामले में अजन्मे बच्चे की नैतिकता के आधार पर पैरवी खुद सुप्रीम कोर्ट ने करते हुए एक मिसाल कायम की है। सुप्रीम कोर्ट ने छब्बीस सप्ताह का गर्भ गिराने की मांग करने वाली याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी है कि चूंकि भ्रूण का विकास सामान्य है इसलिए उसे जन्म लेना चाहिए। अदालत ने यह भी कहा कि बच्चे की स्थिति एक दम सही है और उसे जन्म मिलना ही चाहिए। अदालत कह चुकी है कि महिला यदि चाहे तो पैदा होने वाले बच्चे को जन्म के बाद सरकार को सौंप सकती है। इसी मामले की सुनवाई के दौरान कुछ दिन पहले सीजेआइ डीवाई चंद्रचूड ने कहा था कि बेशक मां की स्वायत्तता बड़ी है, पर यहां अजन्मे बच्चे के लिए कोई भी पैरवी नहीं कर रहा है जो उसके अधिकारों की बात कर सके। निश्चित ही भारतीय न्यायालय के सम्मुख यह अपने आप में एक अनूठा मामला है जिसमें एक अजन्मे शिशु के अधिकारों के लिए सर्वोच्च न्यायालय नैतिक आधार पर पक्षकार बना है।

शादीशुदा महिला को 26 हफ्ते का गर्भ गिराने की मंजूरी देने का फैसला वापस लेने की केंद्र की गुहार पर सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की बेंच ने पिछले बुधवार को खंडित फैसला सुनाया था। बेंच में जस्टिस हिमा कोहली ने कहा था कि कौन–सी अदालत कहेगी कि एक भ्रूण के दिल की धड़कनों को रोका जाए। मैं गर्भपात की मंजूरी नहीं दे सकती। वहीं, जस्टिस बी.वी. नागरत्ना ने कहा कि कोर्ट को महिला के फैसले का सम्मान करना चाहिए, जो गर्भ को गिराना चाहती है। अलग–अलग राय होने पर पर मामला बड़ी बेंच को भेजा गया था। अब कोर्ट के सम्मुख जहां महिला के सुरक्षित एवं स्वस्थ रहने के अधिकार का मामला था वहीं एक अजन्मे बच्चे के अधिकार का भी मामला था। कोर्ट ने दोनों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए जो फैसला लिया, वह कानून से ज्यादा मानवीय दृष्टि से लिया गया फैसला है।

अदालत का यह फैसला निश्चित ही मानवीय पहलुओं को ध्यान में रखकर आया है। एक तथ्य यह भी है कि दुनिया भर में गर्भपात के उदार कानून की मांग को लेकर आंदोलन का दौर भी जारी है। खास तौर से यह आंदोलन उन महिलाओं का पक्षधर है जो अवांछित गर्भ ठहर जाने के कारण गैर–कानूनी गर्भपात का सहारा लेकर अपनी जान तक खतरे में डाल देती हैं। मोटे तौर पर सवाल सिर्फ महिलाओं का उनके शरीर पर अधिकार का ही नहीं है बल्कि गर्भ में पल रहे शिशु के जिंदा रहने के अधिकार का भी है। इस तथ्य को भी ध्यान में रखना आवश्यक होगा कि हमारे देश में कानूनी प्रतिबंध के बावजूद कन्या भ्रूण हत्या के मामले सामने आते ही रहते हैं। जरूरत इस बात की है कि अजन्मे बच्चों के हकों की भी चिंता की जाए और गर्भ में ही ऐसे अजन्मे बच्चों को मार देने के प्रचलन पर नियंत्रण की भी पुख्ता व्यवस्था हो।

ताजा मामले में कई सवाल खड़े हुए हैं कि क्या एक अजन्मे बच्चे को भी एक आम के बराबर कुछ अधिकार मिलते हैं। सबसे पहला सवाल तो यही उठता है कि क्या भ्रूण एक कानूनी व्यक्ति है या नहीं? इस सवाल का जवाब इस आधार पर दिया जा सकता है कि भ्रूण में जीवन है या नहीं? भारतीय कानूनों में जीवन और मृत्यु से जुड़े कई प्रावधान हैं। भारत के आपराधिक कानून के अनुसार, गर्भावस्था की अवधि के लिए बच्चा मां के पास होता है और भ्रूण के रूप में बच्चे का जीवन होता है। अगर कोर्ट और कानून भ्रूण के रूप में बच्चे का जीवन स्वीकार करते हैं तो उसके कुछ संविधानिक अधिकार भी होते हैं। आधुनिक समय में भ्रूणों और विशेषतः कन्याभ्रूणों की हत्या का सिलसिला बढ़ता जा रहा है। जबकि भारतीय संस्कृति में मां की ममता का एक रूप तो वह था, जिसमें वह अपने विकलांग, विक्षिप्त और बीमार बच्चे का आखरी सांस तक पालन करती थी। परिवार के किसी भी सदस्य द्वारा की गई उसकी उपेक्षा से मां पूरी तरह से आहत हो जाती थी। वही भारतीय मां अपने अजन्मे, अबोल शिशु को अपनी सहमति से समाप्त कराने को क्यों एवं कैसे तत्पर हो सकती है? क्या उसकी ममता का स्रोत सूख गया है? क्या भारतीय मातृत्व की नयी परिभाषा गढ़ी जा रही है? सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले ने महिला का अपने ऊपर अधिकार और अजन्मे बच्चे के अधिकारों को लेकर ऐसी चर्चा को जन्म दिया है जिसे लेकर ठोस मानवीय प्रावधान होना ही चाहिए। यों कहा जाना चाहिए कि अजन्मे शिशु के अधिकारों और माता के अधिकारों के बीच संतुलन बनाने की जरूरत है। प्रधान न्यायाधीश और जजों की पीठ ने व्यापक विचार किया और महिला की पैरवी कर रहे वकील से पूछा कि अदालत एक जीवित भ्रूण की हत्या का आदेश कैसे दे? आखिर अजन्मे को भी जीवन जीने का अधिकार है। भले ही दुनिया के कई देशों में जीवन के अधिकार को बड़ा माना जाता है, तो कई देशों में व्यक्ति की इच्छा को बड़ा माना जाता है। इसलिए अब यह भी प्रश्न बना हुआ है कि महिला और गर्भस्थ शिशु में से किसके जीवन के अधिकार को तरजीह दी जाए। गर्भ गिराने की मांग करने वाली महिला का कहना था कि मानसिक एवं शारीरिक स्थिति ठीक न होने और कई बीमारियों से जूझने के कारण वह बच्चे को जन्म देने की स्थिति में नहीं है। कोर्ट ने गर्भवती महिला के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की एक बार फिर जांच करने का निर्देश दिया है। कानून के मुताबिक 24 सप्ताह से अधिक के भ्रूण को गिराया नहीं जा सकता। यह बात अलग है कि बलात्कार जैसे मामलों में पहले भी सुप्रीम कोर्ट ने कानून में तय समयावधि से ज्यादा के गर्भ के मामलों में भी गर्भपात की अनुमति दी है। सात माह के बच्चे को गर्भ से बाहर निकालने का अर्थ है कि मां और शिशु दोनों की सेहत को खतरा पैदा हो सकता है। पैदा होने के बाद शिशु को पालने के बारे में वैकल्पिक व्यवस्था की जा सकती है। आखिर महिला ने जब इतने समय तक अपने गर्भ में भ्रूण को पाला तो कुछ हफ्ते और पालने में क्या हर्ज है। अजन्मे के अधिकार की रक्षा एवं गर्भवती महिला के जीवन के अधिकार की रक्षा के बीच संतुलन स्थापित करते हुए सुप्रीम कोर्ट एक नजीर बना है। यह उन तमाम मामलों के लिए जिनमें व्यक्ति अपने जीवन के अधिकार को ऊपर रखता है, उदाहरण के रूप में पथदर्शन करेगा। ऐसे मामलों में व्यापक जन–जागृति के साथ सरकार को भी गंभीर होना होगा। हमारे देश में शिक्षा के प्रसार के बावजूद खास तौर से ग्रामीण इलाकों में गर्भनिरोधकों के विकल्पों का प्रचार व्यापक रूप में करना होगा। ऐसे में जरूरत है कि देश में गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की नियमित जांच की और प्रभावी व्यवस्था हो। किन्हीं मामलों में ऐसे बच्चों को जन्म के बाद मां उसके पालन करने में अक्षम हो तो बच्चे के पालन की व्यवस्था सरकार को अपने हाथ में लेते हुए ऐसे पालनाघर बनाने चाहिए जहां बच्चों का समुचित लालन–पालन हो सके। बहुत बड़ी तादाद में ऐसे लोग होंगे, जिन्हें अजन्मे बच्चे के अधिकार पता नहीं होते हैं, इन अजन्मे बच्चों के अधिकारों का भी व्यापक प्रचार–प्रसार हो।

–ललित गर्ग

सत्ता प्रबंधन के चक्कर में फेल हुआ बिजली प्रबंधन

जयपुर। भाजपा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि बिजली के क्षेत्र में अग्रणी राजस्थान पिछले 5 सालों में पीछे कर देश के कई राज्यों से पीछे चला गया है। उन्होंने कहा कि बिजली कंपनियों के पास और बिजली कर्मचारियों की तनख्वाह के लाले पड़ रहे हैं वही कमजोर प्रबंधन के कारण इसी सीजन में तीसरी बार बिजली कटौती के हालात पैदा हो रहे हैं। डॉ चतुर्वेदी ने एक बयान जारी करते हुए कहा कि पूरे अगस्त माह में राज्य के आम आदमी को बिजली कटौती का सामना करना पड़ा है इसके बाद एक बार फिर बिजली प्रबंधन फेल हो जाने के कारण उद्योग के ऊपर कटौती के जारी किए गए हैं। बिजली उत्पादन को बढ़ावा देने के स्थान पर बिजली की खरीद को ज्यादा तवज्जो दी जा रही है जिसके कारण बार–बार बिजली की कमी पैदा हो रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में लोगों को 20 घंटे बिजली मिल पा रही है इसके अलावा कृषि कार्यों के लिए इस शासन में 6 घंटे से ज्यादा बिजली नहीं मिल पाई है।

पुलिस स्मृति दिवस आयोजन में पहुंचे सीएम योगी,

शहीद पुलिसकर्मियों की दी श्रद्धांजलि

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पुलिस और पैरामिलिट्री फोर्स के स्मृति दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी इसका हिस्सा बने। शोक परेड के बाद पुलिस फोर्स के सभी शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी गई। सीएम योगी ने इस मौके पर कहा कि बहादुर जवानों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनके परिवार को आश्वस्त करना चाहता हूं कि राज्य सरकार उनके कल्याण के लिए और उन्हें हर संभव सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेगी। बता दें, देशभर में सबसे ज्यादा पुलिसकर्मी उत्तर प्रदेश में शहीद हुए हैं।

रिजर्व पुलिस लाइन में आयोजित 'पुलिस स्मृति दिवस परेड' कार्यक्रम में पुलिस फोर्स के शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बताया गया कि देशभर में पिछले एक साल 414 जवान शहीद हुए हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश पुलिस के 67 पुलिसकर्मियों ने शहादत है। शोक दिवस परेड में शामिल सीएम योगी ने अपने संबोधन में कहा, 'प्रदेश के अपने बहादुर पुलिस जवानों से मैं यही आग्रह करूंगा कि वे अपनी पूरी ईमानदारी और कर्तव्य परायणता के साथ अपने दायित्वों का पालन करें।' उन्होंने कहा कि पुलिस बल के वीर शहीदों ने अपने सर्वोच्च बलिदान और त्याग से उत्तर प्रदेश शासन और पुलिस विभाग का गौरव बढ़ाया है।

पुलिस भर्ती का जिक्र करते हुए सीएम योगी ने कहा, 'राज्य सरकार पुलिस बल की कमी को दूर करने और उनकी कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए भर्ती की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ा रही है।' उन्होंने कहा, 'वर्ष 2018 में घ ोषित परिणाम के अनुसार 29,303 पुलिस आर क्षी प्रशिक्षणरत हैं, जिनमें 5,341 महिला आर क्षी, 20,134 पुरुष आरक्षी, 3,828 पीएसी के जवान भी हैं। साथ ही 42,000 पुलिस कर्मियों की भर्ती प्रचलित है, इसमें और तेजी लाने के लिए अगले चरण में 51,216 पुलिस कर्मियों की भर्ती का भी कार्यक्रम भी घोषित किया गया है।

बता दें, देश में सभी राज्यों और पैरामिलिट्री फोर्स में शहीद होने वालों में उत्तर प्रदेश के पुलिसकर्मियों की संख्या सबसे ज्यादा है। शहादत देने वालों में उत्तर प्रदेश के 67 पुलिसकर्मी, बीएसएफ के 42, आइटीबीपी के 34, आरपीएफ के 25, कश्मीर के 46 और छत्तीसगढ़ के 25 पुलिसकर्मियों ने शहादत दी है।

आतंकवाद से जूझ रहे जम्मू कश्मीर और नक्सलियों का गढ़ कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ से भी ज्यादा उत्तर प्रदेश में पुलिस कर्मियों की जान गई है।

भिन्नता

मनोविज्ञान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर शिखर कोल जी ड्राइंगरुम में सोफे पर बैठकर एक राष्ट्रीय दैनिक अखबार में प्रकाशित खबरों की जानकारी ले रहे थे। प्रथम पृष्ठ में देश की दूषित राजनीतिक प्रणाली पर आधारित खबरों को पढ़ते हुए उनकी नजर कुछ ऐसे शीर्षकों पर पड़ी कि वे हतप्रभ रह गये। वे पढ़ते जा रहे थे कि एक सड़क के किनारे चिंदी में लिपटी एक नवजात बच्ची की लाश मिली। तेरह वर्षीय बालिका का सामूहिक बलात्कार किया गया। अखबार के पन्ने उलटना उन्होंने जारी रखा। बीस वर्षीय विवाहिता को एक लोभी पति ने दहेज के लिए जिंदा जलाकर हैवानियत का परिचय दिया; जैसी खबरें उन्हें पढ़ने को मिली।

प्रोफेसर कोल जी को अखबार के अंतिम पृष्ठ में पढ़ने को मिला कि एक युवक ने अपनी माँ की उम्र की औरत को अपने हवस कि शिकार बनाया। एक बेटे ने सिर्फ एक एकड़ जमीन के लिए अपनी माँ और इकलौती बहन की टंगिया मारकर हत्या कर दी। उनकी नजरें अखबार की बारीक अक्षरों पर पड़ी ही थी कि उन्हें जयघोष का स्वर सुनाई दिया। अखबार को पकड़े हुए ि खड़की से झाँककर देखा। बच्चे, जवान और बूढ़े सभी जयनाद कर रहे थे– "दुर्गा मैया की जय, काली माई की जय, माँ बम्लेश्वरी की जय।"

लोग दुर्गा व काली की प्रतिमा पर पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। रंग और गुलाल से वातावरण रंगीन हो रहा था। प्रतिमा–विसर्जन की यह छवि देखकर प्रोफेसर कोल जी उलझन में पड़ गये। उन्हें अखबार की पंक्तियाँ रह–रहकर याद आने लगी। तीस वर्ष तक मनोविज्ञान के प्रोफेसर रहे शिखर कोल जी औरत के विभिन्न रूपों के प्रति लोगों के व्यवहार की भिन्नता को समझ नहीं पा रहे थे।

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

प्रेम

फूलों पर ओंस बन
नयनों की मूक भाषा बन
अधरों की मुस्कान बन
इशारों के संकेत बन
खिल उठता प्रेम।
मौसम की बहारों पर चल
मंदिरों के आँगन चल
पेड़ों के सहारे चल
प्रतीक्षालय के तले चल
खिल उठता प्रेम।
मोबाइल के संग
बाजारों की दुकानों के संग
त्योहारों के संग
किसी बहानों के संग
खिल उठता प्रेम।
इंतजार के तले
आवाज के तले
धड़कन के तले
नजदीक से गुजरने के तले
खिल उठता प्रेम।
उपहार देने के लिए
बधाई देने के लिए
मन की बात बताने के लिए
संग–संग चलने के लिए
खिल उठता प्रेम।

संजय वर्मा"दृष्टि"
मनावर जिला धार मप्र

मउसेस सदस्य को पत्नी शोक

गोरखपुर। मझवार उत्थान समिति कि एक शोक सभा गत 19अक्टूबर को मुहल्ला नरसिं. हपुर में सुरेन्द्र कुमार मझवार के निवास पर मण्डल अध्यक्ष उमाशंकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

मझवार उत्थान सेवा समिति के सदस्य स्व० रघुनाथ मझवार की पत्नी मुन्नी देवी उम्र करीब 65 का मुहल्ला नरसिंहपुर गोरखपुर निवासिनी के निधन होने पर गहरा दुख व्यक्त किया गया। दो मिनट मौन रहकर ईश्वर से प्रार्थना किया गया कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

शोकसभा में– महेन्द्र कुमार मझवार, प्रेमचन्द मझवार (प्रदेश अध्यक्ष), सुभाष चन्द मझवार (मण्डल उपाध्यक्ष), उमाशंकर मझवार (महामन्त्री), रामाश्रे मझवार, दीपचन्द मझवार, सन्तोष कुमार मझवार, राज कुमार, हरीलाल मझवार, चन्दन मझवार, ओम प्रकाश मझवार, विजय कुमार मझवार, अजय कुमार मझवार, तुफानी लाल मझवार, प्रमोद कुमार मझवार, दयानन्द मझवार, मनोज कुमार मझवार, पा. रसनाथ मझवार, विहारी लाल मझवार, राम मिलन मझवार आदि लोग उपस्थित थे।

पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर पुलिस कर्मियों को दी गई श्रद्धांजलि

जयपुर। राजधानी जयपुर में पुलिस अकादमी पर स्थित शहीद स्मारक पर पुलिस महानिदेशक उमेश मिश्रा ने शहीद पुलिस कर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। चित्तौड़गढ़ और करौली में शहीदों को पुष्पांजलि देने के अलावा रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें 95 लोगों ने रक्तदान किया। श्रीगंगानगर में पुलिस लाइन में शहीदों को सलामी दी गई और उनकी स्मृति में पौधारोपण किया गया। हनुमानगढ़ में भी शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई और रक्तदान तथा पौधारोपण के कार्यक्रम संपन्न हुए। इसी तारतम्यता में जिले के तिब्बी तहसील में शहीद मेजर विकास मामू की आदमकद प्रतिमा पर ग्रामीणों ने पुष्पांजलि अर्पित की उन्हें श्रद्धांजलि दी। बाड़मेर और जानवर में पुलिस लाइन में आयोजित कार्यक्रम में शहीदों को श्रद्धांजलि दिए गए और उनके उपार्जनों को सम्मानित किया गया।

शोकसभा

गोरखपुर। राष्ट्रीय वीर एकलन सेना भारत के कैम्प कार्यालय पर सेना के संरक्षक मण्डल के सदस्य स्व0 गनेश निषाद उम्र 85 वर्ष की आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। दो मिनट मौन रहकर ईश्वर से प्रार्थना किया गया कि भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे कार्यक्रम की अध्यक्षता सेना के राष्ट्रीय मुख्य महाराचिव डॉ० हरिराम निषाद ने की कार्यक्रम में राष्ट्रीय जनता दल के जिलाध्यक्ष महेन्द्र सिंह राणा एडवोकेट मौजूद रहे। इस मौके पर डॉ० हरिराम निषाद ने कहा कि गनेश निषाद एकलब्य सेना के रीढ़ की हड्डी थे आज उनकी कमी हम सब लोग को खल रही है। जिसकी भरपाई करापाना सम्भव नही है। शोकाकुल कार्यकताओं को सम्बोधित करते हुए रा०ज०द० अध्यक्ष महेन्द्र सिंह राणा ने कहा एकलव्य सेना की निमाण में गनेश निषाद का बड़ा योगदान था।

शोक सभा में जयराम, रामनरेश, मनीदास, राजू, नौमी, बाला. रामआशीष, राम प्रकाश, दीलीप, सुनील, बलिराम, रामदयाल, बैधनाथ, ओमप्रकाश गोड़, दुर्गावती देवी, शकुन्ताला देवी, खुशबू भानमती, चिलरेखा, उर्मिला, आदि सैकड़ो आदि लोग इस मौके पर सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपचन्द्र निषाद ने कहा कि स्व० गनेश निषाद की मौत से हम सब दुःखी है।

मिशन शक्ति अभियान पर रैली व बालिका शपथ ग्रहण कार्यक्रम संपन्न

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय व सेंट एंड्रयूज महाविद्यालय के संयुक्त तत्व अवधान में राशियों की तरफ से मिशन शक्ति अभियान पर रैली व बालिका शपथ ग्रहण कार्यक्रम गत दिनों आयोजित किया गया रैली का आयोजन कुलपति प्रोफेसर पूनम टंडन के नेतृत्व में हरी झंडी दिखाकर किया गया।

स्वयंसेवकों एवं स्वयं सेविका तथा कार्यक्रम अधिकारी डॉ जितेंद्र कुमार पांडे द्वारा यह रैली मु ख्य द्वार से प्रारंभ होकर आरटीओ कार्यालय होते हुए सेंट एंड्रयूज महाविद्यालय गोरखपुर तक निकाली गई इस दौरान छात्राओं ने अनेक नारे लगाए जिसमें चुप्पी तोड़ो खुलकर बोलो महिलाओं को सशक्त करना है मानवता में नया रंग भरना है बेटी को खूब पटाए दो घर की किस्मत चमके बेटा बेटी एक समान शिक्षा है सबका अधिकार बराबरी का साथ निभाए महिलाएं अब आगे आए इत्यादि। कार्यक्रम के दौरान कुल पत्नी बालिकाओं को शपथ दिलाई संसद भवन में गांधी जयंती भाषण प्रतियोगिता मैं पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र प्रकाश पांडे को प्रमाण पत्र व स्मृति के निधन देखकर सम्मानित कियज्ञं

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के संबंध में डॉक्टर जितेंद्र कुमार ने कहा कि मिशन शक्ति उत्तर प्रदेश सरकार की एक पल है जिसका उद्देश्य महिलाओं को सशक्त आत्मनिर्भर बनाना है। एन एस एस कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर अपर त्रिपाठी व प्रभुनाथ ने एनएसएस परिवार के ओर से मोमेंटो देकर कुलपति प्रोफेसर पूनम टंडन का अभिनंदन और स्वागत किया कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर रघुनाथ ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रमोद महाजन ग्रामीण कौशल्य विकास केंद्रों का शुभारंभ

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए महाराष्ट्र में 511 प्रमोद महाजन ग्रामीण कौशल्य विकास केंद्रों का शुभारंभ किया। महाराष्ट्र के 34 ग्रामीण जिलों में स्थापित,ये केंद्र ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेंगे।प्रध. ानमंत्री ने अपने संबोधन की शुरुआत यह कहकर की कि यह नवरात्र का 5वां दिन है जब स्कंद माता की पूजा की जाती है। यह देखते हुए कि हर मां अपने बच्चों के लिए खुशी और सफलता की कामना करती है, प्रधान मंत्री ने रेखांकित किया कि इसे केवल शिक्षा और कौशल विकास से ही संभव बनाया जा सकता है।महाराष्ट्र में 511 प्रमोद महाजन ग्रामीण कौशल्य विकास केंद्रों की स्थापना के बारे में बोलते हुए, प्रधान मंत्री ने रेखांकित किया कि आज का दिन लाखों युवाओं के कौशल विकास के लिए एक बड़ा कदम है, जो इस दिन को यादगार बनाता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्व स्तर पर कुशल भारतीय युवाओं की मांग बढ़ रही है। कई देशों की जनसांख्यिकी में बढ़ती आयु प्रोफ़ाइल का उल्लेख करते हुए, प्रधान मंत्री ने एक अध्ययन का उल्लेख किया जिसमें कहा गया है कि 16 देशों ने लगभग 40 लाख कुशल युवाओं को रोजगार प्रदान करने की योजना बनाई है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "भारत सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि दुनिया के लिए कुशल पेशेवर तैयार कर रहा है।" उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में कौशल केंद्र स्थानीय युवाओं को वैश्विक नौकरियों के लिए तैयार करेंगे और उन्हें निर्माण, आधुनिक खेती, मीडिया और मनोरंजन और इलेक्ट्रॉनिक्स में कौशल प्रदान करेंगे। प्रधान मंत्री ने बुनियादी विदेशी भाषा कौशल, भाषा व्याख्या के लिए एआई टूल का उपयोग जैसे सॉफ्ट स्किल में प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया, जो उन्हें भर्तीकर्ताओं के लिए और अधिक आकर्षक बनाएगा।

प्रधान मंत्री ने कहा कि पिछली सरकारों में कौशल विकास के प्रति दूरदर्शिता और गंभीरता की कमी थी, जिसके परिणामस्वरूप कौशल की कमी के कारण लाखों युवाओं के लिए नौकरी के अवसर कम हो गए। प्रधान मंत्री ने रेखांकित किया कि वर्तमान सरकार ने कौशल विकास की आवश्यकता को समझा और अपने स्वयं के बजटीय आवंटन और कई योजनाओं के साथ इसके लिए समर्पित एक अलग मंत्रालय बनाया। प्रध. ानमंत्री ने बताया कि कौशल विकास योजना के तहत 1 करोड़ 30 लाख से अधिक युवाओं को कई विशेषताओं के तहत प्रशिक्षण प्रदान किया गया है, जबकि पूरे देश में सैकड़ों से अधिक प्रधानमंत्री कौशल केंद्र स्थापित किए गए हैं।इस अवसर पर अन्य लोगों के अलावा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस और अजीत पवार मौजूद रहे।

काव्य संग्रह का हुआ विमोचन

कुशीनगर। निराला शब्द संवाद मंच के पहली वर्षगांठ के अवसर पर नगर के एक होटल सभागार में नगर की सुप्रसिद्ध महिला चिकित्सक व कवयित्री डॉक्टर दिव्या शुक्ला द्वारा रचित काव्य संग्रह सिन्धूर्मि का विमोचन मुख्य अतिथि डॉक्टर प्रेमचंद सिंह, विशिष्ट डॉक्टर सुधाकर त्रिपाठी पूर्व प्राचार्य उमाकांत राय पूर्व प्राचार्य डॉक्टर राम नरेश दुबे डॉक्टर गौरव तिवारी एसोसिएट प्रोफेसर रिसर्च स्कॉलर फूल बदन कुशवाहा मनोज शर्मा सारस्वत शैलेंद्र दत्त शुक्ला देवनारायण अग्रवाल कार्यक्रम के अध्यक्ष का कर रहे कई ओमप्रकाश द्विवेदी ओम ने किया।

पुस्तक विमोचन के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ प्रेमचंद सिंह ने कहा कि सिंधूर्मि एक पारिवारिक रचना काव्य संग्रह है। कार्यक्रम के दौरान अनेक वक्ताओं ने इस नए काव्य संग्रह पर अपने–अपने विचार साझा किया।

प्राचार्य प्रोफेसर ममता मणि त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की कविता भावों के अभिव्यक्ति होती है।

जिसे इस संग्रह की कवयित्री ने अपने देखने के माध्यम से लिपिबद्ध करते हुए पुस्तक में संग्रहित किया है। कार्यक्रम का संचालन संजय मिश्रा तथा आभार डॉ अजय शुक्ला ने किया ।

भौतिकता की चाह में पीछे छूटते रिश्ते

आजकल की भागदौड की जिंदगी में लगातार रिश्तों की अहमियत कम हो रही हैं। सभी लोग जैसे भाग रहे हैं और एक दूसरे से मानो कोई प्रतियोगिता–सी कर रहे हैं। पैसा कमाने की कोशिश में रिश्ते नाते पीछे छूट रहे हैं। आज के समय में हमारे पास ढेरों सुविधाएं हैं, बड़ी–बड़ी गाड़ियां हैं, आलीशान घर हैं परंतु रिश्ते नहीं हैं। पैसा और शोहरत कमाने में हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि हम अपने अपनों से दूर हो गए हैं। आज के समय में रिश्ते केवल स्वार्थ पूर्ति का साधन बन गए हैं। "काम खत्म रिश्ते खत्म"। दूर के रिश्तों की बात छोड़िए। आजकल तो माँ–बाप को भी पैसे के लिए इस्तेमाल किया जाता है। माना की समय बदल रहा है, शिक्षा का विस्तार हुआ है, समृद्धि आई है, परंतु साथ–साथ संस्कृति और संस्कारों का भी हनन हुआ है और इसी कारण रिश्ते नातों की अहमियत खत्म हो रही हैं।

जीवन दो–ढाई दशक पहले तक कई मायनों में बहुत ही सादगी भरा और दिखावे से कोसों दूर और वास्तविकता के बहुत पास होता था। तब मनुष्यता के जितने गुण सोचे और तय किए गए हैं, वे सब आसपास के परिवेश के दिख जाते थे। लेकिन आज सरलता और सहजता से दूर दिखावे और स्वार्थ से भरा हुआ जीवन ही ज्यादातर लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इसमें वयस्क या बुजुर्गों की तो दूर, हमने बच्चों तक को नहीं छोड़ा है। आजकल लोग अपने खुशी में कम खुश और दुसरों की दुख में ज़्यादा खुश होने लगें हैं। आज़ शायद ही कोई युवा ख़ासकर जो बेरोजगार हैं , विद्यार्थी हैं अपने रिश्तेदारों से परेशान न हों। कारण, उनकी बेरोजगारी की चिन्ता जितनी उनके माता–पिता को नहीं उससे कहीं ज्यादा उनके रिश्तेदारों को होती है। जो पढ़ाई–लिखाई कर रहे हैं उनको भी यदा–कदा सुनने मिल जाता है कि बुआ जी, मामी जी आदि–आदि किसी से कह रहीं थीं कि लगता है बूढापें तक पढ़ता रहेगा। न जाने क्या पढ़ रहा है आदि–आदि। और गनिमत तो तब हो जाती है जब उनका अपने बच्चों की नौकरी लग गई हो या कोई बिजनेस ही करते हों और रिश्तेदारों के हम– उम्र बच्चे बेरोजगार या अभी छात्र ही हों – कोई मौका छोड़ते नहीं तंज़ कसने का। लेकिन ऐसी स्थिति आयी क्यों ये सोचने वाली बात है – मेरे ख्याल से तो कारण एक ही है – हम खुद ऐसा ही करते है। लेकिन दुसरों से उम्मीद करते हैं कि उनका व्यवहार हमारे साथ अच्छा हो। रिश्तों की इस धूप–छांव में आत्मीयता की मीठी धूप पर आज स्वार्थ की काली बदली भी देखने को मिलती है। कड़ी प्रतिस्पर्धा ने इंसान को स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बना दिया है। पहले किसी को उदास देखकर आसपास के लोग उससे कई सवाल पूछ डालते थे, पर आज अगर कोई अपनी परेशानियां शेयर भी करना चाहता है तो लोगों के पास सुनने का वक्त नहीं होता।

तभी तो आज परेशान लोगों को काउंसलर की जरूरत पड़ती है। भारतीय समाज तेजी से आत्मकेंद्रित होता जा रहा है, पर इसका कम से कम एक फायदा तो जरूर हुआ है कि मुश्किल में अगर कोई किसी की मदद नहीं कर पाता तो उसके निजी जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप करके उसे परेशान भी नहीं करता। आज हम अपनी जरूरतें अपने ही भीतर दफन करते जाते हैं तो कहीं गैरजरूरी बातों और चीजों को जीवन की जरूरत के रूप में अपना लेते हैं। वास्तविक जरूरतों को तवज्जो न देकर समाज में सबसे सर्वश्रेष्ठ और वैभव संपन्न बनने की चाह में न चुकता होने वाले अनचाहे असीमित कर्ज के बोझ तले दब जाने वाले लोगों को देख कर लगता है कि इस भूख की आखिरी मंजिल कहां होगी।

इस तरह जिंदगी के कुदरती रंग को खोते हुए बेमानी होड़ में शामिल होकर हम शायद यह ध्यान रखना भूल गए हैं कि इसके नतीजे भविष्य में बड़े दर्दनाक हो सकते हैं। यह वर्तमान में भी आसपास ही दिखने लगे हैं, जब अक्सर लोग इंसानी मूल्यो और संवेदनाओं के ऊपर अपने दिखावे की प्रवृत्ति को तरजीह देते दिखते हैं। या तो अपने ऐश्वर्य का प्रदर्शन उन्हें प्यारा होता है या फिर वे आभासी दुनिया के सुख को ही सच मान लेते हैं। जबकि इससे भावनाओं और संवेदनाओं की जमीन खोखली होती जाती है। सवाल है कि क्या ऐसे लोग खुद भी अपने साथ संवेदनहीन व्यवहार पसंद करेंगे? रिश्तों में संवेदनशीलता की परिभाषा बदली है। रिश्तों में आत्मीयता , संवेनशीलता में कमी आयी है।

मानव के अंतिम सफर में भौतिक दौलत नहीं काम आती है। मरे हुए व्यक्ति को यानी शव को चार कँधों पर यात्रा की जरूरत होती है। भौतिक संपदा संसार में ही रह जाती है। ताउम्र हमारे रिश्ते ही काम आते हैं जीवन के सफर में हर जन हमारे लिए उपयोगी है। बदलाव एक सहज प्रक्रिया है और इसे रोक पाना संभव नहीं है। सच तो यह है कि हर बदलाव में कोई न अच्छाई जरूर छिपी होती है। बस, जरूरत है उसके सकारात्मक संकेतों को पहचानने की।रिश्ते यानी संबंधों के प्रति संवेदनशील रहना यानी मानवीयता, प्रेम की कसौटी को बनाए रखना ही संवेदनशीलता को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति और हमारे पूर्वजों ने, हर पीढ़ी दर पीढ़ी को रिश्तों के प्रति संवेदनशील रहना सिखाया है।

लेकिन इक्कीसवीं सदी की तकनीकी की सदी ने मानव को मशीनीकरण, पदार्थवाद के धरातल पर खड़ा कर दिया है। जिससे मानव के स्वार्थ में मैं का प्रादुर्भाव हुआ है। समाज में रहते हुए एकाकी जीवन जीना दुष्कर भी है और महत्वहीन भी। जब तक हम पारस्परिक रूप से एक–दूसरे के प्रति प्रेम और सौहार्द बनाकर नहीं र खेंगे, हमारी मुश्किलें और संघर्ष बढ़ते जायेंगे जो हमें अशांत, अस्वस्थ और दुःख की ओर ले जायेंगे, जिससे हम न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि पारिवारिक और सामाजिक रूप से भी विकसित और सम्पन्न होने में बाधित होंगे। अतः जीवन कैसा भी हो, हमसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी जनों के प्रति प्रेम, आदर और सहयोगी होना नितांत आवश्यक है।

जीवन में वही सफल और सुखी हो सकता है, जिसके अधिक से अधिक जनों से संबंध मधुर होते हैं और यह कार्य न कठिन ही है, न मेहनत का।

बस,हमें उदार,त्यागी, उत्साही,स्नेही, स्पष्टवादी, सरल, सहयोगी, निःश्छल और मर्यादित होना है, हम इन गुणों में जितने संवेदनशील होंगे। हम उतने परिपक्व और सामर्थ्यवान होते चलेंगे। इससे हमारे रिश्ते मधुर और मजबूत होंगे जो हमारे जीवन संघर्ष में आने वाली स्वभाविक मुश्किलों से उबरने में हमारे सहयोगी बनेंगे।

ये हमें आत्मीयता देकर हमें सदैव निराश और हताश होने से बचाते हुए हमारे रक्षा कवच बनेंगे और ऐसे ही हम उनके लिए भी होंगे। अतः हमें रिश्तों को स्थायी, मधुर और मजबूती के लिए सदैव सजग और संवेदनशील रहना है ताकि हम किसी भी प्रकार से कमजोर कड़ी साबित न हों।

सील रहे रिश्ते सभी, बिना प्यार की धूप।
धुंध बैर की छा रही, करती ओझल रूप।।
सुख की गहरी छाँव में, रहते रिश्ते मौन।
दुख करता है फैसला,
सौरभ किसका कौन।।

–प्रियंका सौरभ

एक अजीब सी दौड़ है ये ज़िन्दगी, जीत जाओ तो कई अपने पीछे छूट जाते हैं और हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं। रिश्तों के प्रति इंसान को जागरूक होना चाहिए तथा रिश्तों की अहमियत को पहचाना चाहिए। जो रिश्तों के अर्थ को समझ सकता है। वहीं रिश्तों को निभा सकता है। जीवन दो–ढाई दशक पहले तक कई मायनों में बहुत ही सादगी भरा और दिखावे से कोसों दूर और वास्तविकता के बहुत पास होता था। तब मनुष्यता के जितने गुण सोचे और तय किए गए हैं, वे सब आसपास के परिवेश के दिख जाते थे। लेकिन आज सरलता और सहजता से दूर दिखावे और स्वार्थ से भरा हुआ जीवन ही ज्यादातर लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इसमें वयस्क या बुजुर्गों की तो दूर, हमने बच्चों तक को नहीं छोड़ा है। आजकल लोग अपने खुशी में कम खुश और दुसरों की दुख में ज़्यादा खुश होने लगें हैं।

निठारी कांड के दोषियों का बरी होना सरकार और जांच एजेंसियों के कामकाज पर बड़ा सवाल

उत्तर प्रदेश के दिल्ली से सटे नोयडा के निठारी गांव में आज से 17 वर्ष पूर्व दिल दहला देने वाले उस मंजर को कौन भूल सकता है, जब 29 दिसंबर 2006 को नोयडा, सेक्टर 31 के निठारी गांव स्थित डी–5 कोठी के आसपास और कोठी के पीछे बहते नाले तक में एक के बाद एक नर कंकाल मिलने से लोगों की रूह कांप उठी थी। यह सभी कंकाल छोटी उम्र के बच्चे–बच्चियों के थे। उस समय प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार थी और मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे। इस हादसे ने सीएम की कुर्सी को हिला कर रख दिया था। जनता आगबबूला थी तो विपक्ष ने भी इस पर खूब सियासत की थी, क्योंकि तीन–चार महीने बाद यूपी विधान सभा चुनाव होने थे।

निठारी कांड से हिली मुलायम सरकार की छवि को इस कांड से काफी बड़ा दाग लगा था। तब मुलायम सरकार में शामिल शिवपाल यादव से जब पत्रकारों ने निठारी कांड के बारे में पूछा तो उन्होंने बड़ी हठधर्मी से कह दिया था कि इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं, इसके बाद पुलिस ने भी जांच में ढिलाई बरतना शुरू कर दी। इस मामले में तत्कालीन पुलिस अधिकारी और उनके अधीनस्थों पर भी लापरवाही के आरोप लगे हैं। यह आरोप यूं ही नहीं लगे थे, इसके पीछे सच्चाई भी थी। सूत्र बताते हैं कि 2005 से 2006 के बीच जब बच्चे गायब हो रहे थे, तब कुछ पुलिसकर्मी घटना के पर्दाफाश के करीब पहुंच गए थे, लेकिन तत्कालीन सरकार के दबाव में अधिकारियों ने मामला पर्दाफाश नहीं होने दिया था। सरकार के करीब रहे एक स्थानीय नेता ने भी जांच को भटकाने में खास भूमिका निभाई थी।

सूत्र बताते हैं कि उस समय जिले में तैनात अधिकारी इस मामले को लेकर दो फाड़ हो गए थे। बच्चों के प्रति संवेदना रखने वाले पुलिसकर्मियों का एक गुट मामले का पर्दाफाश चाहता था, जबकि दूसरा गुट सरकार की छवि धूमिल न हो, इसके लिए प्रकरण को दबाए रहा। बच्चे गरीबों के थे। उनके पास किसी की सिफारिश नहीं थी। यही कारण है कि मानवीय संवद. नाएं इस हद तक तार–तार हो गई थीं कि एक के बाद एक 19 बच्चे लापता होते रहे। जांच के लिए पुलिस की कई टीमें लगाई गईं। एसओजी और तकनीकी रूप से मजबूत पुलिस टीम को बच्चों के गायब होने की सच्चाई सामने लाने की जिम्मेदारी सौंपी गई, उन्होंने मुलायम सरकार के दबाव में साक्ष्यों को कमजोर कर दिया, लेकिन जनता ने समाजवादी पार्टी के साथ पूरा इंसाफ किया और अप्रैल 2007 के विधान सभा चुनाव में सपा को बुरी तरह से हार का सामना करना पड़ा एवं बसपा की सरकार बनी।

उधर, निठारी कांड पर जांच जारी रही, जिसमें तमाम चौंकाने वाले खुलासे हुए। लापता 18 बच्चों और एक कॉल गर्ल की हत्या की बात सामने आई। कुछ समय बाद ही मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच का जिम्मा सीबीआई को सौंप दिया गया, जिस कोठी के अंदर से नर कंकाल मिले थे उसके मालिक मोनिंदर सिंह पंढेर और नौकर सुरेंद्र कोली आरोपी बने। उन्होंने पुलिस के समक्ष अपना जुर्म भी कबूल कर लिया था, पुलिस का कहना था कि जांच के दौरान कोली ने नरभक्षण और नेक्रोफिलिया (शवों के साथ संबंध बनाने) की बात कबूल की थी। बाद में उन्होंने अदालत में अपना कबूलनामा ये कहते हुए वापस ले लिया कि उनसे जबरन ये बयान दिलवाया गया था। सीबीआई ने सुरेंदर कोली और पंढेर के खिलाफ़ 19 मामले दर्ज किए थे। जहां कोली पर हत्या, अपहरण, बलात्कार, सबूतों को मिटाने जैसे आरोप थे तो वहीं पंढेर पर अनैतिक तस्करी का आरोप था। कुल मिलाकर दोनों के खिलाफ अलग–अलग धाराओं में 19 मामलों में ट्रायल शुरू हुआ और 2017 में सीबीआई कोर्ट द्वारा दोनों को फांसी की सजा सुनाई गई, लेकिन करीब 17 साल बाद 16 अक्टूबर 2023 का इलाहाबाद हाई कोर्ट ने चौकाने वाला फैसला देते हुए पंढेर और कोली दोनों को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया और सीबीआई को पर्याप्त सबूत नहीं जुटाने के लिये फटकार भी लगाई।

इलाहाबाद हाईकोर्ट से इस फैसले के बाद पीड़ित परिवार के साथ आसपास के लोग खंडहर हो चुकी उस कोठी के पास पहुंचे जहां उनके बच्चों के साथ हैवानियत की गई थी तो उनका दर्द छलक पड़ा। वहां पहुंचे उन लोगों के चेहरे बुझे हुए थे तो कानून के प्रति नाराजगी भी थी। अपनों को खोने वालों ने कहा कि 17 साल के लम्बे इंतजार के बाद भी हम लोगों को न्याय नहीं मिला। हम लोग आज भी वहीं खड़े हैं, जहां घटना वाले दिन खड़े थे। निठारी कांड में अपने बच्चों को खाने वाले परिवार वालों का लगभग एक ही सवाल है कि अगर पंढ़ेर और कोली निर्दोष हैं तो उनके बच्चों को किसने मारा है। इसका जवाब कौन देगा? हो सकता है कि अदालत के सामने मजबूत साक्ष्य पेश करने में सीबीआई सफल नहीं रही हो, लेकिन इससे पीड़ित परिवार वालों का कोई लेना–देना नहीं है। सवाल यह भी उठ रहा है जिस आधार पर नीचे की दो अदालतों ने आरोपियों को फांसी की सजा सुनाई थी, वह आधार हाईकोर्ट में टिक क्यों नहीं पाए और दोनों आरोपी बरी हो गये, जबकि इस कांड को रेयरेस्ट ऑफ द रेयर कांड माना गया था। गौरतलब है कि हत्या मामले में किसी मुजरिम को तभी फांसी की सजा सुनाई जाती है जब मामला रेयरेस्ट ऑफ रेयर का हो। इस कारण सजा पर बहस के दौरान एक तरफ जहां सरकारी पक्ष मामले को रेयरेस्ट ऑफ रेयर की श्रेणी में लाने की कोशिश करती है वहीं बचाव पक्ष की यह कोशिश होती है कि वह मामले को रेयरेस्ट ऑफ रेयर की श्रेणी में नहीं आने दे।

इस बात को अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि निठारी कांड के समय जांच में सामने आए तथ्य इतने भयावह थे कि ऐसी हैवानियत इंसान करेगा, ये कल्पना ही कोई नहीं कर पा रहा था। इसके बाद नर पिशाच शब्द लोगों की जुबां से यहां अपराध करने वालों के लिए निकला। निठारी में उस समय कई बच्चे लापता हुए थे, जिनके साथ हैवानियत किये जाने की बात इस कांड में सामने आ रही थी। गांव निठारी निवासी राजवती कहती हैं कि पिछले 17 वर्षों में काफी कुछ बदल गया है, लेकिन उस नरसंहार कांड की यादें आज भी लोगों के दिलो दिमाग में ताजा हैं। राजवती जोकि अब जूता–चप्पल की दुकान चला रही हैं उन्होंने अपना 5 साल का बच्चा निठारी कांड में खोया था, उन्होंने बताया कि शादी के 8 साल बाद उनको बच्चा हुआ था। 27 अप्रैल 2006 को वह घर के बाहर खेलने के लिए गया था लेकिन वापस नहीं लौटा। फिर जानकारी मिली कि उसका कंकाल डी–5 बंगले के सामने बहने वाले नाले में मिला था। राजवती जोर देकर कहती हैं कि अगर कोर्ट ने कह दिया है कि वो दोनों दोषी नहीं हैं तो किसने मेरे बच्चे को मारा है।

इसी तरह से निठारी कांड की पीड़ित और लापता हुई 10 वर्षीय बच्ची की मां हाईकोर्ट के फैसले के बाद फफक पड़ीं और बोलीं वक्त बीत गया लेकिन आंसू नहीं सूखे और बेटी की यादें धुंधली नहीं हुईं। फांसी की सजा जब हुई थी तब लगा था कि बेटी की मौत पर इंसाफ शायद मिल जाए, लेकिन आज लग रहा है कि इंसाफ की उम्मीद भी मर रही है। वहीं, ज्योति के पिता जब्बू लाल का कहना था कि 17 साल बीत जाने के बाद भी हम लोगों को न्याय नहीं मिला है और सुप्रीम कोर्ट से न्याय की उम्मीद है। उस दिन हुआ क्या था ये पूछने पर झब्बू लाल बताते हैं कि डी–5 कोठी के सामने ही हम कपड़े धुलाई और प्रेस करने की दुकान चलाते थे। झब्बू लाल की 10 साल की बेटी कपड़े लेकर दुकान से बाहर निकली और वह वापस नहीं आई। झब्बू लाल और उनकी पत्नी बेटी को ढूंढ़ने बाहर निकले तब कोठी के सामने मनिंदर पंढेर और सुरेंद्र मिले भी थे। बेटी के बारे में पूछा था तो दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया था। इसके बाद इन दोनों का ही नाम आया था। निठारी से 2006 में ही रामकिशन का 3 साल का मासूम बेटा लापता हुआ था। उसका नाम भी केस में हुई हत्याओं में शामिल था। नोएडा अथॉरिटी में चालक रामकिशन ने जब हाईकोर्ट का फैसला सुना तो वह मौके पर बदहवासी की स्थिति में पहुंच गए। कोई कुछ समझ पाता इसके पहले पड़ी हुई ईंटे उठाकर खंडहर हो चुकी कोठी पर फेंकने लगे। फिर खड़े होकर किसी को फोन करने की कोशिश की और उनके आंखों से आंसू टपकने लगे। बात करने पर बस यही बोले कि बेटे के बारे में न पूछिए, दुख बार–बार बता नहीं सकता। काफी देर तक कोठी की तरफ खड़े–खड़े निहारते रहे और वहां से चले गए।

नोएडा के सेक्टर–31 में निठारी गांव की कोठी नंबर डी–5 मोनिंदर सिंह पंढ़ेर की थी और वह वहीं रहता था। मोनिंदर मूल रूप से पंजाब का रहने वाला है, वर्ष 2000 में उसने ये कोठी खरीदी थी। तीन साल से उसका परिवार भी इस कोठी में रहा था। इसके बाद पंजाब शिफ्ट हो गया। मोनिंदर ने घर पर अल्मोड़ा (उत्तराखंड) निवासी सुरेंद्र कोली को नौकर रखा था। धीरे–धीरे इस इलाके से कई बच्चे व बच्चियां लापता होनी शुरू हो गईं। एक कॉल गर्ल भी लापता हो गई। मामला जब पुलिस के पास पहुंचा तो मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच के लिए नोएडा पुलिस की दो टीमों का गठन किया गया। एक टीम बच्चों के लापता होने पर अलग–अलग गैंग पर पंजाब, हरियाणा, राजस्थान समेत अन्य प्रदेश में काम कर रही थी। वहीं, दूसरी तरफ एक टीम कॉल गर्ल की तलाश में लगी थी। जांच के दौरान पुलिस की टीम डी–5 कोठी तक पहुंची थी। इसके बाद 29 दिसंबर 2006 को कोठी के आगे नाले और पीछे खाली जगह में कई कंकाल मिले थे। इसके बाद दोनों जांच एक ट्रैक पर शुरू हो गई थी। सीबीआई ने इन हत्याओं में मोनिंदर सिंह पंढ़ेर और सुरेंद्र कोली को आरोपी बनाया था। सुनवाई के बाद कई मामलों में दोनों को फांसी की सजा भी सीबीआई कोर्ट से सुनाई गई थी, जिन्हें हाईकोर्ट ने बरी कर दिया।

साभार–स्वदेश कुमार

'दिखावा' तेजी से फैलता एक सामाजिक रोग

समय के साथ बदलते समाज में दिखावे की प्रवृत्ति तेज़ी से बढ़ रही है। आजकल ज़्यादातर लोग दूसरों के सामने अपनी नकली छवि पेश करते हैं। काफी हद तक ईएमआइ की सुविधाओं ने भी लोगों में दिखावे की इस आदत को बढ़ावा दिया है। दूसरे के पास कोई भी नई या महंगी चीज देखकर लोगों के मन में लालच की भावना जाग जाती है। फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल साइट्स की वजह से भी युवाओं में दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है। रिलेशनशिप को भी सोशल साइट्स पर दूसरों को दिखाने के लिए ही अपडेट किया जा रहा है। जैसे–जैसे आपकी उम्र बढ़ेगी, आपके आचार, विचार और व्यवहार में गंभीरता आएगी। तब कभी आप सोचेंगे कि अगर मैं 300 रुपए की घड़ी पहनूं या 30000 की, दोनों समय एक जैसा ही बताएंगी। मैं 300 गज के मकान में रहूं या 3000 गज के मकान में, तन्हाई का एहसास एक जैसा ही होगा। सोने के लिए एक बेड ही पर्याप्त होगा। फिर आपको ये भी लगेगा कि यदि मैं बिजनेस क्लास में यात्रा करूं या इक्नामी क्लास में, अपनी मंजिल पर उसी नियत समय पर ही पहुँचूँगा। या फिर रेलवे के स्लीपर क्लास में यात्रा करो या एसी में, ट्रेन एक ही समय में दोनों को पहुंचाएगी। इसलिए अपनी आवश्यक आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए न कि व्यर्थ के दिखावे पर फोकस करना चाहिए।

किसी भी चीज का दिखावा करने की आपको कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इससे क्षणिक फायदा मिलता है। हमें कुछ भी काम करना है वह दूर दृष्टि को ध्यान में रखते हुए करना है। अपनी क्षमताओं को बढ़ाइए और यह सब पॉसिबल होगा जब आप अच्छी बातों को अपने जीवन में धार लेंगे। यह आप जीवन के किसी भी पड़ाव पर कर सकते हैं तो फिर दि खावे की क्या जरूरत है? इंसान को केवल अपना मानसिक संतुलन बराबर रखते हुए आत्मविश्वास की चरम प्रकाष्ठा पर पहुंचना होगा। इसमें पहुंचने का सबसे आसान तरीका है कि वह अपने को सादा जीवन और उच्च विचार वाली कहावत पर चरितार्थ करें। हमें जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए बहुत कुछ अपने अंदर बदलाव करने होंगे वह सब आसानी से कर सकते हैं सिर्फ सोच को सकारात्मक बना ले। आज का युग आधुनिक युग है, जहां हर क्षेत्र में विकास देखने को मिलता है।

पूरी दुनिया पर आधुनिकता का भूत सवार हो चुका है। आधुनिकता का सीधा संबध विकास से दिखाई देता है। उद्योग से लेकर प्रयोग तक यह संसार बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। पीछे मुड़कर देखना नहीं चाहते हैं हम इस विकास की दौड़ में हम मानवता को भूल चुके हैं। हम एक बार भी पीछे मुड़कर देखना भी नहीं चाहते हैं, जो एक बड़ी भूल साबित हो सकती है।

कहते हैं कि इतिहास अपने आप को दोहराता है, जो हमें समय–समय पर देखने को भी मिलता है। इतना होने के बावजूद हम कुछ सीखने के मूड में नहीं हैं। आज के दौर में आनलाइन प्लेटफार्म पर निजी जीवन का अनावश्यक दिखावा इस कदर बढ़ गया है कि हम जो खाएं, पीएं, घूमने जाएं, उसे आनलाइन प्लेटफार्म पर डालना जैसे हमारी ड्यूटी में शामिल हो गया है। नई चीज खरीदते हैं तो उसे फेसबुक पर अपलोड करना नहीं भूलते। परिवार के साथ छुट्टियां बिताने के दौरान खींची निजी तस्वीरों को भी लोग साझा करने से नहीं चूकते। जैसे–जैसे आपकी उम्र बढ़ेगी, आपके आचार, विचार और व्यवहार में गंभीरता आएगी। तब कभी आप सोचेंगे कि अगर मैं 300 रुपए की घड़ी पहनूं या 30000 की, दोनों समय एक जैसा ही बताएंगी। मैं 300 गज के मकान में रहूं या 3000 गज के मकान में, तन्हाई का एहसास एक जैसा ही होगा। सोने के लिए एक बेड ही पर्याप्त होगा। फिर आपको ये भी लगेगा कि यदि मैं बिजनेस क्लास में यात्रा करूं या इक्नामी क्लास में, अपनी मंजिल पर उसी नियत समय पर ही पहुँचूँगा। या फिर रेलवे के स्लीपर क्लास में यात्रा करो या एसी में, ट्रेन एक ही समय में दोनों को पहुंचाएगी। इसलिए अपनी आवश्यक आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए न कि व्यर्थ के दिखावे पर फोकस करना चाहिए।

आजकल केवल रहन–सहन में ही नहीं, बल्कि रिश्तों के मामले में भी लोग नकली व्यवहार करने लगे हैं। यहां तक कि प्यार जैसी कोमल और सच्ची भावना में भी अब दिखावे की मिलावट हो रही है। आज की युवा पीढ़ी में रिश्तों के प्रति पहले जैसी ईमानदारी नज़र नहीं आती। लोग मन ही मन दूसरों के बारे में बुरा सोचते हैं, पर उनके सामने अच्छा बने रहने का ढोंग करते हैं। झूठ की बुनियाद पर टिके ऐसे रिश्ते नकली और खोखले होते हैं, इसीलिए वे जल्द ही टूट भी जाते हैं। हमें अपने बच्चों को बहुत ज्यादा अमीर बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाए बहुत ज्यादा खुश कैसे रहना चाहिए ये सिखाना चाहिए। हमें भौतिक वस्तुओं के महत्व को देखना चाहिए उसकी कीमत को नहीं। दिखावे की जिंदगी से हमें बाहर आना होगा। आने वाली पीढ़ी को बताना होगा कि उनका यह समय पठन–पाठन व ज्ञानअर्जन का है। ऐसे में जरूरी है कि हम फेसबुक, वाट्सएप पर सिर्फ अपने काम की बातों से ही सरोकार रखें। वाट्सएप पर रिश्ते बनते हैं पर बिगड़ते भी हैं। गलतफहमियां होती हैं। अंततः रिश्ते बिखरते देर नहीं लगती। बच्चों को अभिभावक जितना समय देंगे, बच्चे उतने ही संस्कारवान बनेंगे। एकल परिवार की विभीषिका झेलने पर मजबूर बच्चे एकाकीपन का समाधान मोबाइल पर ढूंढने लगते हैं। संवादहीनता से बचाव, बच्चों की बातों को सुनना व उनकी दिनचर्या का भाग होना ही उन्हें आपके प्रति आकर्षित करेगा।

हमें यह जानना होगा कि अगर समाज में दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है तो इसकी वजह क्या है? आज लोगों को पहले की तुलना में पैसे कमाने के ज़्यादा विकल्प मिल रहे हैं। पहले लोग अपनी सीमित आमदनी में भी संतुष्ट रहना जानते थे। अब वे सोचते हैं कि हमारे पास और क्या होना चाहिए, जिससे समाज में हमारा स्टेटस ऊंचा नज़र आए। काफी हद तक ईएमआइ की सुविधाओं ने भी लोगों में दिखावे की इस आदत को बढ़ावा दिया है। दूसरे के पास कोई भी नई या महंगी चीज देखकर लोगों के मन में लालच की भावना जाग जाती है। फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल साइट्स की वजह से भी युवाओं में दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है। रिलेशनशिप को भी सोशल साइट्स पर दूसरों को दिखाने के लिए ही अपडेट किया जा रहा है। हम अपनी सभी गतिविधियों को वहां साझा करके चर्चा में बने रहना चाहते हैं। अब लोग रिश्तों के मामले में भी दिखावा करने लगे हैं। जीवन में अब पहले जैसी सहजता नहीं रही। इसी समाज का हिस्सा होने के कारण जाने–अनजाने हम सब इससे प्रभावित हो रहे हैं। इसलिए हमें सचेत ढंग से ऐसी आदत से बचने की कोशिश करनी चाहिए। **– डॉ. सत्यवान सौरभ,**

सवालिया दस्तक देते ग्लोबल हंगर इंडेक्स–2023 के आंकड़े

हालिया जारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स–2023 के आंकड़ों ने भारतीय विकास और प्रगति के दावों पर सवालिया दस्तक देने के लिए पर्याप्त समझे जा सकते हैं। समतामूलक समाज की आकांक्षा में यदि देश अपने नागरिकों की भूख का समाधान नहीं कर पाता तो यह सोचनीय विषय है।

ग्लोबल हंगर इंडेक्स की हालिया रिपोर्ट में भारत को दुनिया के 125 देशों में 111वें स्थान पर रखा गया है। चिंता की बात यह है कि भूख का स्तर गंभीर श्रेणी का है। रिपोर्ट बताती है कि देश में बच्चों के कुपोषण का स्तर 18.7 फीसदी है। निस्संदेह, ऐसे हालात में देश के नीति– निर्माताओं को भूख व कुपोषण के निराकरण के लिये कारगर योजनाओं को तुरंत अमल में लाने की जरूरत है।

हालांकि, जीएचआई को इस रिपोर्ट को खारिज करते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने इस सर्वे की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाये है। साथ ही इसे दुर्भावना से प्रेरित व त्रुटिपूर्ण बनाकर खारिज किया है। वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण यानी एनएफएचएस की रिपोर्ट भी एक चिंताजनक स्थिति की ओर संकेत करती है। जो बताती है कि महाराष्ट्र में नवजात मृत्युदर और अधिकसित बच्चों के अनुपात में काफी वृद्धि हुई है।

एनएफएचएस–5 की रिपोर्ट कई चिंताजनक स्थितियों की ओर इशारा करती है। वैसे यह एक विरोधाभासी तथ्य है कि भारत की आबादी का एक बड़ा भाग नं. केवल खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर है बल्कि बची उपज का निर्यात भी करता है। जिसके चलते देश में कुपोषण व भूख से जुड़े ग्लोबल हंगर इंडेक्स के आंकड़ों की तार्किकता पर सवाल उठते हैं। भारत को आज दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था कहा जा रहा है तो सवाल उठना स्वाभाविक है कि फिर कैसे कुपोषण व भूख के आंकड़ों में भारत को पाकिस्तान, बांग्लादेश नेपाल आदि से नीचे दर्शाया जा रहा है। वैसे, नीति आयोग के राष्ट्रीय गरीबी सूचकांक आंकड़ों के अनुसार ऐसी गरीबी में रहने वाले लोगों का प्रतिशत लगभग पंद्रह था। जुलाई में आयोग की एक रिपोर्ट से पता चला था कि 74 फीसदी लोग स्वस्थ मानकों का भोजन नहीं खरीद सकते हैं। निस्संदेह, बेहतर पोषण के लिये सभी की पौष्टिक भोजन तक पहुंच स्वच्छ पानी और स्वच्छता की स्थितियां सुनिश्चित की जानी चाहिए। ऐसे में मौजूदा दर पर भारत द्वारा सतत विकास मानकों के अनुरूप वर्ष 2030 तक भूख खत्म करने का लक्ष्य पूरा करना मुश्किल लगता है। सवाल यह भी उठता है कि देश की प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक क्यों नहीं पहुंच पा रहा है। प्रगति के तमाम दावों के बावजूद भूख के ये आंकड़े क्यों परेशान कर रहे हैं। यह भी कि सांग लगा शेयर बाजार का कोई रिश्ता हमारी गरीबी दूर करने से है? देश में बढ़ती आर्थिक असमानता कालांतर कानून व्यवस्था के लिये चुनौती बन सकती है। नीति–नियंताओं को इस बात पर भी विचार करना होगा कि देश में आर्थिक असमानता निरंतर क्यों बढ़ रही है।

वसुंधरा समर्थकों की नाराजगी बढ़ी तो...

राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने 41 प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी है। इस सूची में शामिल 41 सीटों में से 40 सीटों पर भाजपा पिछले विधानसभा चुनाव में हार गई थी। एकमात्र विद्याधर नगर की सीट पर पूर्व मंत्री नरपत सिंह राजवी चुनाव जीते थे। मगर उनका भी टिकट काट दिया गया है। विद्याधर नगर से मौजूदा विधायक नरपत सिंह राजवी, झोटवाड़ा से पूर्व मंत्री राजपाल सिंह शेखावत, मांडल से पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर, नगर से पूर्व विधायक अनिता सिंह, बांदीकुई से पूर्व विधायक अलका सिंह गुर्जर, सुजानगढ़ से पूर्व मंत्री खेमाराम मेघवाल, वैर से पूर्व विधायक रामस्वरूप कोली का टिकट कटने से वसुंधरा खेमे में नाराजगी व्याप्त हो रही है। टिकट कटने वाले सभी नेता पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के करीबी माने जाते हैं।

हालांकि भाजपा आलाकमान का कहना है कि हमने जो 41 सीटों पर पार्टी प्रत्याशियों की घोषणा की है उनमें से 40 प्रत्याशी पिछले चुनाव में हार चुके थे। इनमें भी 11 सीट दातारामगढ़, कोटपूतली, झुंझुनू, सांचैर, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ, नवलगढ़, लालसोट, सपोटरा, बागीदौरा और बस्सी ऐसी विधानसभा सीट हैं जहां भाजपा पिछले तीन चुनाव से लगातार हार रही है। इन 41 सीटों में 2018 में भाजपा ने सिर्फ एक सीट ही जीती थी। वहीं 2013 में 25 सीट व 2008 में 5 सीटो पर ही जीत पाई थी।

अपने हार के आंकड़ों को सुधारने के लिए ही भाजपा ने इस बार इन 41 सीटों पर बड़ा फेरबदल किया है। इन 41 सीटों में से 29 सीटों पर इस बार भाजपा ने नए उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारा है। इनमें से 6 प्रत्याशी तो ऐसे हैं जो पिछले विधानसभा चुनाव में निर्दलीय या अन्य दलों से चुनाव लड़े थे। इनमें से कई ऐसे प्रत्याशी भी हैं जो पिछले चुनाव में तीसरे नंबर पर आए थे। लेकिन फिर भी उनको पार्टी टिकट दे दी गई है। अभी तक भाजपा द्वारा घोषित किए गए 41 प्रत्याशियों में 6 लोकसभा के मौजूदा सांसदो को टिकट दिया गया है।

जिसमें जयपुर ग्रामीण के सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राज्यवर्धन राठौर को झोटवाड़ा से कैबिनेट मंत्री लालचंद कटारिया के सामने, अलवर सांसद बाबा बालकनाथ को तिजारा में राज्य खाद्य निगम के अध्यक्ष विधायक संदीप यादव के सामने, जालौर सांसद देवजी पटेल को सांचैर से मंत्री सुखराम बिश्नोई के सामने, अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी को किशनगढ़ से निर्दलीय विधायक सुरेश टांक के सामने, झुंझुनूं सांसद नरेंद्र कुमार को मंडावा से कांग्रेस विधायक रीटा चौधरी के सामने, राजसमंद सांसद दिया कुमारी को विद्याधर नगर से भाजपा ने प्रत्याशी बनाया है। राज्यसभा सांसद डॉक्टर किरोडी लाल मीणा को सवाई माधोपुर से कांग्रेस के विधायक दानिश अबरार के सामने, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया को लक्ष्मणगढ़ सीट से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के सामने प्रत्याशी बनाया गया है। पूर्व सांसद बहादुर सिंह कोली को वैर से कैबिनेट मंत्री भजनलाल जाटव के सामने उम्मीदवार बनाया गया है।

भाजपा का मानना है कि अशोक गहलोत सरकार में कैबिनेट मंत्री व कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं के सामने सांसदों को प्रत्याशी बनाने से चुनाव में कांटे की टक्कर हो जाएगी। ऐसे में सरकार के मंत्री दूसरी सीटों पर प्रचार करने के लिए नहीं निकाल पाएंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डोटासरा के सामने भाजपा ने पूर्व केंद्रीय मंत्री व सीकर से तीन बार सांसद रहे सुभाष महरिया को प्रत्याशी बनाया है। सुभाष महरिया 2013 के विधानसभा चुनाव में गोविंद सिंह डोटासरा से पराजित हो चुके हैं।

भाजपा ने जिन 41 सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा की है उनमें से अधिकांश सीटों पर टिकट की दावेदारी जता रहे प्रत्याशियों ने विरोध करना शुरू कर दिया है। कई सीटों पर तो पिछले चुनाव में भाजपा प्रत्याशी रहे नेताओं ने निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा भी कर दी है। जिससे भाजपा की स्थिति खराब हो रही है। भाजपा ने झुंझुनूं सीट पर पिछली बार चुनाव लड़े राजेंद्र भाम्भू के स्थान पर पिछली बार निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े निषित उर्फ बबलू चौधरी को टिकट दिया है। जिससे नाराज होकर राजेंद्र भाम्भू ने निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है।

मंडावा में सांसद नरेंद्र कुमार को टिकट देने से 2019 के विधानसभा उपचुनाव में प्रत्याशी रही सुशीला सीगड़ा, पूर्व प्रधान गिरधारी खिचड़ ने भी बगावती राग अलापना शुरू कर दिया है। जयपुर के झोटवाड़ा सीट पर तो पूर्व मंत्री राजपाल सिंह का टिकट कटने के बाद उनके समर्थको ने सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़ को काले झंडे दिखाकर विरोध जता रहे हैं। कोटपूतली से टिकट कटने पर पिछली बार भाजपा के प्रत्याशी रहे मुकेश गोयल ने निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है। भरतपुर जिले की नगर सीट से दो बार विधायक रही अनीता गुर्जर ने अपना टिकट काटने पर निर्दलीय चुनाव लड़ने की बात कही है।

देवली–उनियारा सीट पर गुर्जर नेता रहे कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैसला को टिकट देने पर पिछली बार भाजपा प्रत्याशी रहे राजेंद्र गुर्जर काफी नाराज है तथा खुलकर अपनी नाराजगी प्रकट करते हुए विजय बैसला को बाहरी प्रत्याशी बताकर उनका विरोध कर रहे हैं। सांचैर से सांसद देवजी पटेल को टिकट मिलने पर 2018 में चुनाव लड़े दानाराम चैधरी के समर्थक तो देवजी पटेल के साथ मारपीट तक कर चुके हैं।

2022 में सहाड़ा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा ने रतनलाल जाट को टिकट दिया था। मगर इस बार लादूलाल पितलिया को प्रत्याशी बनाया है। उपचुनाव में पीतलिया ने निर्दलिय फॉर्म भरा था मगर बाद में समझाने पर चुनाव मैदान से हट गए थे। हालांकि भाजपा ने उदयपुरवाटी से अपने पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी को टिकट देकर महाराष्ट्र में शिवसेना शिंदे गुट में शामिल हुए बर्खास्त मंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा के लिए सीट नहीं छोड़कर शिंदे गुट को उनकी हैसियत दिखा दी है। लाल डायरी प्रकरण से चर्चित हुए राजेंद्र सिंह गुढ़ा पिछले दिनों ही अपने गांव में महाराष्ट्र के मु ख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को लाकर यह प्रयास कर रहे थे कि भाजपा उनके लिए खाली छोड़ दे। मगर भाजपा ने ऐसा नहीं किया।

हालांकि कांग्रेस ने अभी तक राजस्थान में अपने प्रत्याशियों की घोषणा नहीं की है। जबकि भाजपा ने 41 सीटों पर नाम की घोषणा कर दी है। मगर प्रत्याशियों के नाम की घोषणा करने के बाद भाजपा में जिस तरह की आपसी खींचतान व विरोध हो रहा है उसके चलते पार्टी बैक फुट पर आ गई है। इसी कारण पार्टी ने अन्य प्रत्याशियों के नाम की घोषणा रोक दी है। भाजपा में घोषित उम्मीदवारों के खिलाफ उठे विद्रोह से भाजपा के बड़े नेता डर गए लगते हैं। वहीं वसुंधरा राजे समर्थक वर्तमान विधायकों को भी अपनी टिकट कटने का डर सताने लगा है। मगर पार्टी में उठे विरोध को दे खते हुये मौजूदा विधायकों का टिकट काटना भाजपा के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकता है।

रमेश सर्राफ धमोरा

भाजपा का मानना है कि अशोक गहलोत सरकार में कैबिनेट मंत्री व कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं के सामने सांसदों को प्रत्याशी बनाने से चुनाव में कांटे की टक्कर हो जाएगी। ऐसे में सरकार के मंत्री दूसरी सीटों पर प्रचार करने के लिए नहीं निकाल पाएंगे।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 69 वें फिल्म राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये। अल्लू अर्जुन को (पुष्पा के लिए) सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, आलिया भट्ट को (गंगूबाई काठियावाड़ी) कृति सेनन (मिनी के लिए) संयुक्त रूप से सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पल्लवी जोशी (द कश्मीर फाइल्स) सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री और पंकज त्रिपाठी को (मिमी के लिए) सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। फिल्मकार आर आर आर को संपूर्ण मनोरंजन करने वाली सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय फिल्म और विवेक अग्निहोत्री के निर्देशन में बनी (द कश्मीर फाइल्स) राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार प्रदान किया गया। वहीं वहीदा रहमान को दादा साहेब फाल्के लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आर माध्वन की द नाम्बी राकेट सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म तथा सृष्टि लेखे के निर्देषन में बनी एक था गांव सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म का पुरस्कार प्रदान किया गया।

समलैंगिक जोड़ों के शादी करने के अधिकार को मान्यता नहीं

- कानून बनान संसद का काम

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता दिए जाने की मांग वाली याचिकाओं पर गत मंगलवार को फ़ैसला सुना दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि क़ानून समलैंगिक जोड़ों के शादी करने के अधिकार को मान्यता नहीं देता और इसके लिए कानून बनाना संसद का काम है। भारत के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने इस मामले में आदेश सुनाते हुए कहा, "ये अदालत क़ानून नहीं बना सकती लेकिन क़ानून लागू कर सकती है।"

भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली पांच न्यायाधीशों (न्यायमूर्ति एसके कौल, रवीन्द्र भट्ट, हिमा कोहली और पीएस नरसिम्हा) की पीठ केंद्र के इस विचार से सहमत थी कि कानून के साथ छेड़छाड़ करने से अन्य कानूनों पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। सीजेआई ने कहा कि ये अदालत संसद या राज्यों की विध. ानसभाओं को शादी की नई संस्था का गठन करने के लिए विवश नहीं कर सकती। लेहाजा, पीठ ने सर्वसम्मति से देश में समलैंगित विवाह की अनुमति नहीं देने के लिए कानून में संशोधन नहीं करने का फैसला लिया।

उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि बताएगा उम्मीदवार को जाने एप

जयपुर। निर्वाचन आयोग ने उम्मीदवारों के आपराधिक रिकॉर्ड की जानकारी देने के लिए अपने उम्मीदवार को जाने नाम से मोबाइल एप्प को जारी किया है। इसमें उम्मीदवारों द्वारा प्रकाशित सूचनाएं होंगी यह एप्लीकेशन नागरिकों को उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि जानने की सुविधा प्रदान करेगा। यह मा. बाइल एप्लीकेशन पीसी आई एंड्रायड और आईओएस दोनों प्लेटफार्म पर उपलब्ध है। निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर दिये गये लिंक के जरिये एप डाउन लोड किया जा सकता है।

'उम्मीदवार की सही पहचान करने की व्यवस्था सुनिश्चित'

जयपुर। विधानसभा चुनावों में उम्मीदवारों के फोटो को भी बैलेट पेपर पर प्रिंट बरवाने का प्रावधान किया गया है। इससे मतदाताओं को एक ही नाम के एक से अधिक उम्मीदवार की स्थिति में उम्मीदवार की सही पहचान करने में आसानी होगी। इसके लिए विधानसभा चुनाव लड़ने वाले सभी उम्मीदवारों को आयोग के निर्देशानुसार संबंधित रिटर्निंग अधिकारी के यहां डाकटिकट के आकार का फोटो उपलब्ध करवाना अनिवार्य होगा। इसके अतिरिक्त इन चुनावों में दृष्टिबाधित मतदाताओं को ब्रेल लिपि में मुद्रित मतदाता पर्ची उपलब्ध ा कराई जायेगी। बीएलओ घर–घर जाकर मतदान पर्ची का वितरण करेंगे। ये केवल उन्हीं मतदाताओं को जारी की जायेगी जिनके ब्रेल लिपि में मतदाता पहचान पत्र जारी नहीं किये गये हैं।

सभी लोग मिलकर चुनाव लड़ेंगेः गहलोत

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि पुरानी बातों को भूलकर सभी लोग मिलकर चुनाव लड़ेंगे। पत्रकारवार्ता के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि सारी पार्टी एकजुट होकर और सब पुरानी बातें भूल चुके हैं। उन्होंने कहा कि सचिन पायलट के किसी भी समर्थक की उम्मीदवारी का विरोध नही किया उनके समर्थकों के लिए टिकट क्लियर हो रहे हैं। श्री गहलोत ने कहा कि प्रत्याशी के लिए जीत का मुख्य उद्देश्य निर्धारित है। वे मुख्यमंत्री का पद छोड़ना चाहते हैं लेकिन पद उन्हें नहीं छोड़ रहा है।

वोट मैराथन : राज्य में मतदान प्रतिशत बढत्राने के उद्देश्य से जगज–जगह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। बीकानेर में मतदाताओं को शत–प्रतिशत मतदान के लिए शहरवासियों ने वोट मैराथन निकाली। स्वीपकार्य के तहत भीलवाड़ा जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष मोदी की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई।

सूखा दिवस की घोषणा

जयपुर। राज्य सरकार ने विधान सभा चुनावों के निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित कार्यक्रमानुसार मतदान समाप्ति के 48 घंटे पहले से पूरे राज्य मे सूखा दिवस घोषित किया है। इस विषय में विभाग की ओर से आदेश जारी किया गया। जिसके अनुसार 23 नवंबर की शाम से 25 नवंबर को मतदान समाप्ति तक राज्य में सूखा दिवस रहेगा। पनर्मतदान की स्थिति में संबंधित मतदान केन्द्र के क्षेत्रों में पुनर्म. तदान के दौरान शराब व इसी प्रकृति के किसी तरह के मादक पदार्थ बिक्र और वितरण पर पूर्ण रूप से प्रतिबंधित रहेगा। 3 दिसंबर को मतगणना वाले दिन भी सूखा दिवस घोषित किया गया है।

महिला आरक्षण बिल मातृत्व शक्ति को सशक्त करने के लिये आवश्यक

कुशीनगर। तुर्कपट्टी स्थित सूर्यमन्दिर परिसर में महिला आरक्षण बिल पर गत रविवार को धन्यवाद प्रस्ताव कार्यक्रम के तहत गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने महिला आरक्षण बिल से होने वाले फायदे और मातृ शक्ति का विकसित समाज के विकास में योगदान पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा कि मातृत्व शक्ति हमारे देश में प्राचीन काल से ही पूजनीय नहीं हैं ऐसे में महिला आरक्षण बिल मातृत्व शक्ति को सशक्त करने के लिये आवश्यक था। कार्यक्रम संयोजिका पूर्व विधायक शशि शर्मा ने महिला आरक्षण बिल पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि महिला आरक्षण विधेयक पारित होने से भारत में लैंगिक समानता और लोकतंत्र की जीत का प्रतिनिधित्व होता है।

उन्होंने कहा कि सत्र 1985–89 में मैं इस मंडल की एकमात्र महिला विधायक थी, लेकिन अब इस कानून से महिलाओं की राजनीति में भागीदारी समाज को एक अलग रूप प्रदान करेगी।

भाजपा नेता दिवाकर मणि ने भी महिला कानून पर प्रकाश डाला और केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की सराहना की कार्यक्रम की अध्यक्षता मण्डल अध्यक्ष विद्याधर ओझा ने किया।

स्वदेशियों को लाने के लिए ऑपरेशन विजय शुरू

संकटग्रस्त नागरिकों को वापस लाने में भारत ने मित्र और दुश्मन देशों के नागरिकों की सुरक्षा में कोई भेदभाव नहीं रखा, जो मानवता की अनूठी मिसाल है। आतंकवाद पूरी दुनियाके लिए बड़ा खतरा है।

इजराइल और हमास के बीच लगातार आक्रामक होता युद्ध वैश्विक स्तर पर गम्भीर चिन्ता का विषय है, क्योंकि इस मुद्देपर दुनिया दो खेमे में बंटी हुई दिख रही है जिससे तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा मंडराने लगा है। इस समय सबसे बड़ी चिन्ता की बात इजराइल में फंसे विदेशी नागरिकों की है जिसमें करीब बीस हजार भारतीय हैं। इन भारतीयों को सुरक्षित वापस लाने के लिए केन्द्र सरकार ने आपरेशन' अजय' शुरू कर दिया है। स्वदेश वापसी अभियान के तहत शुक्रवार को इजराइल से अनेक भारतीयों को लेकर पहली उड़ान दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरी जहां इनका स्वागत केन्द्रीयमंत्री रांजीव चन्द्रशेखर ने किया। परराष्ट्र मंत्रालय के प्रवक्ता अरिदम बागची ने बताया कि इस समय सरकार का पूरा ध्यान इजराइल में फंसे भारतीयों के वापस लाने पर है। इसके लिए वहां मौजूद जो भारतीय वापस लौटना चाहते हैं उन्हें भारतीय दूतावास में पंजीकरण कराने के लिए कहा गया है। दूसरी ओर भारतीय दूतावास ने भी इजराइल में फंसे भारतीय लोगों से सम्पर्क करने का अभियान शुरू कर दिया है। साथ ही ई–मेल के माध्यम से कम्पनियोंमें काम करनेवाले भारतीयोंकी सहूलियतके लिए आपरेशन अजयके तहत फ्लाइटकी जानकारी दी जा रही है। जो सरकार की अपने नागरिकों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता और सक्रियता को दर्शाता है। भारत का यह प्रशंसनीय प्रयास कोई पहली बार नहीं है। इसके पहले भी कई ऐसे आपात और संकट की घड़ी में भारतने विदेशोंमें फंसे न सिर्फ अपने, बल्कि विदेशी नागरिकोंको भी सुरक्षित वापस लाया है। संकटग्रस्त नागरिकों को वापस लाने में भारत ने मित्र और दुश्मन देशों के नागरिकों की सुर क्षा में कोई भेदभाव नहीं रखा, जो मानवता की अनूठी मिसाल है। आतंकवाद पूरी दुनियाके लिए बड़ा खतरा है। हमास एक आतंकी संघटन है। इसपर पूर्ण नियंत्रणके लिए सख्त प्रतिबन्ध लगानेकी आवश्यकता है।

धारा 144 लागू, उल्लंघन करने वालों के खिलाफ

नोएडा। उत्तर प्रदेश में गौतम बुद्ध नगर की पुलिस ने 15 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक जनपद में धारा 144 लगा दी है। इस दौरान बिना अनुमति के कोई सभा / कार्यक्रम करने और जुलूस निकालने पर प्रतिबंध रहेगा। एक पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि नवरात्रि से पहले जारी इस आदेश के अनुसार पुलिस की अनुमति लिए बिना सार्वजनिक स्थान पर नमाज, पूजा या किसी अन्य धार्मिक गतिविधियां नहीं की जा सकेंगी। उन्होंने बताया कि विवादास्पद स्थान पर पूजा और नमाज सहित धार्मिक गतिविधियों की अनुमति नहीं दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि 15 अक्टूबर शुरू हो रहे नवरात्रि के अलावा 23 अक्टूबर को महाराजा अग्रसेन जयंती, 24 अक्टूबर के दशहरा और 28 अक्टूबर की महर्षि वाल्मीकि जयंती है, जबकि 31 अक्टूबर को सरदारवल्लभभाई पटेल और आचार्य नरेंद्र देव की जयंती है।

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, उनका कहना था कि इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध नगर में सरकार विभिन्न आयोग/परिषदों आदि द्वारा समय–समय पर विभिन्न परीक्षाएं आयोजित की जाती है, जिसकी सूचना नियत तिथि से थोड़ा पहले दी जाती है। जबकि धरना प्रदर्शन आदि विभिन्न कार्यक्रम भी अक्सर होते रहते हैं। उन्होंने कहा कि उपरोक्त के मद्देनज़र असामाजिक तत्वों द्वारा शांति भंग करने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। उनका कहना था कि वर्तमान में विभिन्न पार्टियों के कार्यकर्ताओं, भारतीय किसान संगठनों और विभिन्न प्रदर्शनकारियों के विरोध प्रदर्शन के कारण शांति भंग हो सकती है। उन्होंने कहा की धारा 144 का पालन नहीं करने वालों के खिलाफ स ख्त कार्रवाई की जाएगी।

जयपुर। महाकवि सूर्यमल मिश्रण की जयंती पर गत दिनों बूंदी जिले में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। रानी की बावड़ी स्थित सूर्यमल मिश्रण की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बार विरासत यात्रा निकाली गई जो सूर्यमल हवेली पहुंची। साथ ही बावणी परिसर में सूर्यमल मिश्रण ने अपना साहित्य रचा था वहां भी विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

विश्व नेताओं और नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं ने डॉ. शिशिर श्रीवास्तव की नवीनतम पुस्तक का किया विमोचन।

विमर्श साहित्य संस्था की 50 वीं मासिक काव्य गोष्ठी संपन्न

राजनीति में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण के निर्माण के लिए साहित्य का मार्गदर्शन आवश्यक

कुशीनगर। नगर के उदित नारायण स्नातकोत्तर मह. विद्यालय के सभागार में विमर्श साहित्य संस्था की 50 वीं मासिक काव्य गोष्ठी डॉक्टर पुनीता त्रिपाठी की पुस्तक ल क्ष्मी नारायण मिश्र के नाटकों में पात्र परिकल्पना का विमोचन एवं भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले साहित्यकारों को संयुक्त रूप से विमर्श भोजपुरी साहित्य सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया। शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन एवम् दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। विमर्श के अध्यक्ष आर के भट्ट बाबर उपाध्यक्ष ज्ञानवर्धन गोविंद राव और सचिव जय कृष्ण शुक्ल ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व गृह राज्य मंत्री कुंवर आरपीएन सिंह, विशिष्ट अतिथि विधायक पडरौना मनीष जायसवाल, पूर्व विधायक कुश. ीनगर रजनीकांत मणि त्रिपाठी, उदित नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ रामनरेश दुबे, समाजसेवी दीप नारायण अग्रवाल और सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉक्टर संदीप अरुण श्रीवास्तव का माल्यार्पण करते हुए अंग वस्त्र देकर स्वागत अभिनंदन किया। महाविद्यालय की छात्रा रही एवं वर्तमान समय में महाराजगंज में श्री बद्री दास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराजगंज की प्रधानाचार्य डॉक्टर पुनीता त्रिपाठी की पुस्तक पंडित लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटकों में पात्र परिकल्पना का विमोचन उपस्थित अतिथि गणों के द्वारा किया गया । साथ ही विमर्श साहित्यिक संस्था के द्वारा भोजपुरी भाषा में श्रेष्ठ साहित्य सृजन के लिए श्रीमती माया शर्मा एवं अश्विनी द्विवेदी को संयुक्त रूप से विमर्श साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान के अंतर्गत सम्मान पत्र अंग वस्त्र तथा रुपए 5000 नगद धनराशि दी गई हा इस अवसर पर मुख्य अतिथि कुंबर आरपीएन सिंह ने अपने संबोधन में कहा की साहित्यिक गतिविधियां समाज के दशा और दिशा को तय करती है, हमें इस प्रकार के आयोजनों को और बढ़ावा देना चाहिए और इन सभी साहित्यकारों एवं कवियों को के लिए बड़े स्तर के कार्यक्रम का आयोजन करते हुए नई पीढ़ी के लोगों से रूबरू कराया जाना चाहिए खासकर युवा छात्र–छात्राओं के लिए अत्यंत आवश्यक है जबकि वर्तमान समय में मोबाइल नेकिताबों को पढ़ने और अन्य प्रकार के पठन पाठन के कार्यों को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है । विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने कहा कि राजनीति में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण के निर्माण के लिए साहित्य का मार्गदर्शन आवश्यक है सभी अतिथियों ने सम्मानित कवियों तथा पुस्तक के विमोचन के लिए डॉक्टर पुनीता त्रिपाठी की भूरी भूरी प्रशंसा की और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर रामनरेश दुबे ने की जबकि संचालन अनूप मिश्रा ने किया। इस अवसर पर काव्य गोष्ठी में कवि दिनेश भोजपुरीया, आकाश महेपुरी, सुजीत पांडे, गोमल यादव, रुबी गुप्ता, वकार वाहिद जावेद सरवर, मदन मोहन पांडे, बलराम राय, नूरुद्दीन नूर मधुसूदन पांडे, ओमप्रकाश द्विवेदी ओम, अर्शी वस्तवी, कल्पना मद्धेशिया, शैलेंद्र असीम कृष्ण श्रीवास्तव, राघव शरण मिश्रा, सुनील चौरसिया सावन, जय कृष्णा शुक्ला, रामनरेश शर्मा शिक्षक, सहित अन्य कवियों ने अपनी अपनी रचनाएं पढ़ी, जिस पर श्रोताओं ने जोरदार तालिया से उन्हें सराहा । इस अवसर पर शैलेंद्र दत्त शुक्ला डॉक्टर मनीष सिंह, डॉ आशुतोष त्रिपाठी, परशुराम श्रीवास्तव, डॉक्टर श्रीमती सुनीता पांडे, अरुणेश मंटू बाबा बी एन मिश्रा, अनिल मिश्रा नवनीत, रितेश, जगदंबा अग्रवाल आफताब आलम, मनोज पासवान, डी के पांडे, अनुराग मिश्रा, सौरभ जयसवाल, राज सिंह, राहुल साहा, कृष्ण प्रताप चंदन, टी एन सिंह, विनय उपाध्याय, शैलेश उपाध्याय, शमशेर मल्ल आदि लोग उपस्थित रहे । अंत अध्यक्षता कर रहे डॉक्टर रामनरेश दुबे ने कार्यक्रम के सफलता की सराहना की तथा कार्यक्रम को समापन की घोषणा को संस्था के अध्यक्ष आर के भट्ट बाबरा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

मानव तस्करी चिंताजनक

बिहार में मानव तस्करी की घटनाएं बेहद चिंता का विषय है। इस पर अंकुश लगाने की दिशा में राज्य की पुलिस निरन्तर प्रयास कर रही है लेकिन इसमें और तेजी लाने की आवश्यकता है। बिहार में महिला और पुरुष दोनों ही मानव तस्करी के शिकार हो रहे हैं।

पुलिस मुख्यालय के एडीजी जितेन्द्र सिंह गंगवार ने जो आकड़े प्रस्तुत किये हैं वह चौकाने वाले हैं। इस वर्ष अगस्त तक 465 लोगों को मानव तस्करों से मुक्त कराया गया, जिनमें 102 महिलाएं और 363 पुरुष हैं। पुरुषो की संख्या महिलाओं से अधिक है।

आलोच्य अविधि में मानव तस्करी के कुल1998 मामले दर्ज किये गये। पुलिस ने 215 मानव तस्करों को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की। जो अच्छी उपलब्धि है लेकिन मानव तस्करों के खिलाफ बड़ा अभियान चलाने की आवश्यकता है। पुलिस ने वर्ष 2018 से अगस्त 2023 तक कुल 2575 लोगों को मानव तस्करों से मुक्त कराया है। इसके अतिरिक्त बच्चों के साथ होने वाले यौन अपराध से जुड़े पाक्सो एक्ट के मामलों के निष्पादन में भी तेजी आई है।

इस वर्ष अगस्त तक पाक्सो एक्ट में 1983 मामले दर्ज हुए हैं, जिनमें 1932 मामलों में आरोप पत्र जारी कर दिए गए हैं। एक बड़ा प्रश्न यह भी है कि मानव तस्करी की घ टनाओं के पीछे मूल कारण क्या है, इसका पता लगाया जाना चाहिए। वैसे प्रथम दृष्टया गरीबीको एक कारण माना जा सकता है।

बिहार में मानव तस्करी और बच्चों के साथ यौन शोषण के मामले कानून व्यवस्था के समक्ष बड़ी चुनौती है और इसके खिलाफ बहुआयामी रणनीति बनाने की जरूरत है जो मामले दर्ज हुए हैं उनका निस्तारण त्वरित गति से होना चाहिए जिससे कि दोषियों को कड़ी सजा समय के अन्दर दी जा सके।

दिल बिखर जाता है टूट कर मेरा

गम कभी मेरे यहां तुम गर जरा पहचान लो।
है मुझे तकलीफ अब कितनी कभी तुम जान लो।।
दिल बिखर जाता है मेरा टूट कर जोड़ो इसे।
पर कभी हारा नहीं यह देख इसका ज्ञान लो।
आस छूट्टी है दिखा दे रोशनी की अब प्यार से ।
उलझनें ही है निशानी प्रेम की बस मान लो।।
जिंदगी की कशमकश ने भी मुझे जकड़ा यहां ।
फिर रहा मारा हुआ सा अब जरा संज्ञान लो।।
दर्द दिखता है सभी को तुम भला क्यों नासमझ हो ।
आज फिर से तुम यहां पर प्रेम का ही दान लो।।
हो रही बेचैनियां है अब फिर मिला लो नैन तुम।
अब कहो अपना भलाई है इसी में ठान लो।।
मान जाओ बात मेरी कह रही सीमा तुझे।
हम बने हैं एक दूजे के लिए ही मान लो।

सीमा रंगा इन्द्रा

केजरीवाल सरकार की नाकामी का सबसे बड़ा उदाहरण

यमुना नदी में गहराता प्रदूषण

यमुना नदी का प्रदूषित जल और जहरीला झाग यह दर्शाने के लिए काफी है कि अरविंद केजरीवाल सरकार के दावों और हकीकत में जमीन–आसमान का अंतर है। इच्छाशक्ति हो तो गंगा जैसी बड़ी नदी को भी प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है, यह संकल्प देश ने सिद्ध करके दिखाया है।

दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार की नाकामियों के चलते यमुना नदी एक बार फिर सुर्खियों में है। हम आपको याद दिला दें कि इस साल मॉनसून के दौरान यमुना नदी में बाढ़ आई थी तो केजरीवाल सरकार ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए हरियाणा सरकार पर हथिनी कुंड बैराज से ज्यादा पानी छोड़ने का आरोप लगा दिया था। अब यमुना नदी में जल प्रदूषण का स्तर गहरा गया है तो जल्द ही इसका भी आरोप किसी और पर मढ़ दिया जायेगा। केजरीवाल सरकार ने यमुना नदी की सफाई के कितने ही वादे किये, तमाम तरह के फंड जारी करने की बात भी कही, यही नहीं चुनावों के दौरान अरविंद केजरीवाल ने वादा भी किया कि यदि यमुना साफ नहीं कर पाया तो मुझे वोट मत देना, लेकिन वह कभी भी अपने वादों पर खरे नहीं उतरे। हालत यह है कि आज यमुना नदी विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में शुमार है और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में अक्सर शीर्ष स्थान पर बनी रहती है।

देखा जाये तो दिल्ली में यमुना नदी का प्रदूषित जल और जहरीला झाग यह दर्शाने के लिए काफी है कि अरविंद केजरीवाल सरकार के दावों और हकीकत में जमीन–आसमान का अंतर है। इच्छाशक्ति हो तो गंगा जैसी बड़ी नदी को भी प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है, यह संकल्प देश ने सिद्ध करके दि खाया है। इसलिए सवाल उठता है कि यमुना को बहरहाल, आस्था का महापर्व छ ठ भी आने वाला है। इस दौरान बड़ी सं ख्या में छठ व्रती यमुना के जल में खड़े होकर भगवान सूर्य को अर्घ्य देंगे। जल प्रदूषित होने से श्रद्धालुओं को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा लेकिन लगता है राज्य सरकार को इसकी कोई परवाह नहीं है। इसलिए भाजपा सांसद मनोज तिवारी और दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा कालिंदी कुंज के पास यमुना की हालत का जायजा लेने पहुँचे। भाजपा नेताओं ने नाव से सवारी कर यमुना की स्थिति देखी और फिर केजरीवाल सरकार पर जोरदार निशाना साधा। उम्मीद है कि आने वाले दिनों में और स्थानीय नेता इसी प्रकार नाव से यमुना के प्रदूषण का जायजा लेंगे और राज्य सरकार पर निशाना साधेंगे, पलटवार में राज्य सरकार भाजपा पर निशाना साधेगी और यमुना को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए उठाये गये कदमों की जानकारी देगी। लेकिन यमुना प्रदूषित की प्रदूषित बनी रहेगी।

दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार की नाकामियों के चलते यमुना नदी एक बार फिर सुर्खियों में है। हम आपको याद दिला दें कि इस साल मॉनसून के दौरान यमुना नदी में बाढ़ आई थी तो केजरीवाल सरकार ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए हरियाणा सरकार पर हथिनी कुंड बैराज से ज्यादा पानी छोड़ने का आरोप लगा दिया था। अब यमुना नदी में जल प्रदूषण का स्तर गहरा गया है तो जल्द ही इसका भी आरोप किसी और पर मढ़ दिया जायेगा। केजरीवाल सरकार ने यमुना नदी की सफाई के कितने ही वादे किये, तमाम तरह के फंड जारी करने की बात भी कही, यही नहीं चुनावों के दौरान अरविंद केजरीवाल ने वादा भी किया कि यदि यमुना साफ नहीं कर पाया तो मुझे वोट मत देना, लेकिन वह कभी भी अपने वादों पर खरे नहीं उतरे। हालत यह है कि आज यमुना नदी विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में शुमार है और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में अक्सर शीर्ष स्थान पर बनी रहती है।

देखा जाये तो दिल्ली में यमुना नदी का प्रदूषित जल और जहरीला झाग यह दर्शाने के लिए काफी है कि अरविंद केजरीवाल सरकार के दावों और हकीकत में जमीन–आसमान का अंतर है। इच्छाशक्ति हो तो गंगा जैसी बड़ी नदी को भी प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है, यह संकल्प देश ने सिद्ध करके दि खाया है। इसलिए सवाल उठता है कि यमुना को बहरहाल, आस्था का महापर्व छ ठ भी आने वाला है। इस दौरान बड़ी सं ख्या में छठ व्रती यमुना के जल में खड़े होकर भगवान सूर्य को अर्घ्य देंगे। जल प्रदूषित होने से श्रद्धालुओं को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा लेकिन लगता है राज्य सरकार को इसकी कोई परवाह नहीं है। इसलिए भाजपा सांसद मनोज तिवारी और दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा कालिंदी कुंज के पास यमुना की हालत का जायजा लेने पहुँचे। भाजपा नेताओं ने नाव से सवारी कर यमुना की स्थिति देखी और फिर केजरीवाल सरकार पर जोरदार निशाना साधा। उम्मीद है कि आने वाले दिनों में और स्थानीय नेता इसी प्रकार नाव से यमुना के प्रदूषण का जायजा लेंगे और राज्य सरकार पर निशाना साधेंगे, पलटवार में राज्य सरकार भाजपा पर निशाना साधेगी और यमुना को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए उठाये गये कदमों की जानकारी देगी। लेकिन यमुना प्रदूषित की प्रदूषित बनी रहेगी।

मां दुर्गा के नौ रूप और नौ रंग

इन दिनों शारदीय नवरात्रि का पर्व चल रहा है। इस दौरान भक्त मां दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए पूरी विधि–विधान के साथ पूजा करते हैं। इस दौरान मां की प्रिय चीजों का भोग लगाते हैं और उनका आशीर्वाद पाते हैं। धार्मिक शास्त्रों के अनुसार, नवरात्रि में रंगों का भी खास महत्व होता है। माना जाता है इन नौ दिनों में नौ रंग मां को समर्पित होते हैं। इन्हीं रंगों को पहनकर मां की पूजा करनी चाहिए।

पहला दिन :– पहले दिन ही घ टस्थापना होती है और इस दिन मां ब्रह्मा शैलपुत्री की पूजा पूरे विधि–विधान के साथ की जाती हैं। देवी का प्रिय रंग नारंगी माना जाता है। यह रंग स्फूर्ति और उल्लास का प्रतीक होता है।

दूसरा दिनः नवरात्रि का दूसरा दिन मां ब्रह्मचारिणी का माना जाता है। इस दिन सफेद रंग के कपड़े पहनकर पूजा करने से मां ब्रह्माचारिणी के साथ– साथ भगवान भोलेनाथ का भी आशीर्वाद मिलेगा। यह रंग शुद्धता और शांति का प्रतीक माना जाता है। इसे पहनने से व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है।

तीसरा दिनः तीसरा दिन मां चंद्रघंटा का माना जाता है। इस दिन लाल रंग पहनना बेहद शुभ होता है। लाल रंग मां

दुर्गा को भी बेहद प्रिय होता है। यह रंग शक्ति और प्रेम का प्रतीक माना जाता है।

चौथा दिन चौथा दिन मां कूष्मांडा का होता है। इस दिन नीला रंग पहनना शुभ माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार, ये रंग अतुलनीय आनंद की अनुभूति देता है इसे पहनने से व्यक्ति की समृद्धि में वृद्धि होती है।

पांचवां दिन पांचवा दिन माँ स्कंदमाता का माना जाता । इस दिन पीला रंग पहनकर मां की पूजा करना बेहद शुभ माना जाता है। इस रंग को पहनकर माँ माँ महागौरी की पूजा करने से व्यक्ति को सौभाग्य प्राप्त होता है।

छठा दिनः इस दिन मां कात्यानी की पूजा होती है।

छठे दिन हरा रंग पहनकर पूजा करना शुभ माना जाता है इसे पहनने से व्यक्ति की उन्नति के रास्ते खुलते हैं। यह प्रकृति, खुशहाली और विकास का प्रतीक माना जाता है।

इस रंग–को पहनने से वैवाहिक जीवन में वंश और वृद्धि का आशीर्वाद मिलता है।

सातवां दिनः इस दिन मां कालरात्रि की पूजा होती है। मां की पूजा में ग्रे यानी की स्लेटी रंग इस्तेमाल करना शुभ होता है। इस रंग को पहनकर पूजा करने से बुराईयों का नाश होता है।

आठवां दिनः इस दिन मां महागौरी की पूजा होती है। आठवें दिन जामुनी रंग के वस्त्र पहनकर मां की पूजा करना बेहद शुभ माना जाता है। नवदुर्गा की पूजा में बैंगनी रंग इस्तेमाल करने से भक्तों को समृद्धि और संपन्नता की प्राप्ति होती है।

नवमी तिथिः इस दिन सिद्धिदात्री देवी की पूजा होती है। मां की पूजा के लिए मयूर हरा रंग इस्तेमाल करना शुभ माना जाता है। यह रंग विशिष्टता और व्यक्तित्व को दर्शाता है।

अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

युं प्यार से मिलना और मिलाना चाहिए
कतरा–कतरा मिल के समंदर बन चाहिए
बहुत अंधेरा छा गया है जीवन में दोस्तों
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए
कहने को तो अब सब कुछ है जीवन में
पर सुकून का कोई पल नहीं है जहन में
अहसासों में सुकून का ठिकाना चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए
कब तक चलेगी नियति से लड़ाई हमारी
प्रतिपल बदलती जैसे लगती हो बीमारी
खुशियों का हाल भी बदला होना चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए
हर कोई मुक़द्दर से लड़ नहीं सकता
तकदीर का लिखा बदल नहीं सकता
तकदीर बदले ऐसे तदबीर होना चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए
होने को तो सब हो सकती मुक़म्मल
सत्य पर करता नहीं कोई अब अमल
असत्य पर सत्य की जीत होनी चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

प्रमेशदीप मानिकपुरी
आमाचानी धमतरी छ.ग.

ईर्ष्या से हमेशा दिल जलाया

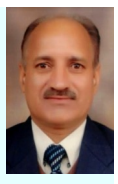

जीवन में जो कुछ अच्छा मिला
दिया न उस पर कभी ध्यान
चिंता में रहा उसकी जो नहीं मिला
सोच सोच कर होता रहा परेशान
बहुत कुछ दिया ऊपर वाले ने
पर हमेशा उसकी ही की बुराई
दूसरों की खुशी देखकर जलाया कलेजा
गिर गया उसी में
जो दूसरों के लिए खोदी थी खाई
ईर्ष्या रही मन में हमेशा दिल जलाता रहा
दूसरों के बारे में सोचकर
मन को उलझाता रहा
अपने मन के अंदर
झांक कर कभी देखा नहीं
दूसरों को उपदेश सुनाता रहा
जो जिसको मिला जीवन में
उससे यदि आदमी संतुष्ट हो जाता
सुखी रहता उम्र भर वह
कोई कष्ट उसके नज़दीक न आता
ईर्ष्या से हमेशा दिल जलाया
जो अच्छा मिला था वह भी गंवाया
जलते रहे मन ही मन दूसरों को देखकर
सोचो ईर्ष्या करके हमने क्या पाया

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

मानवीय सन्दर्भों के सशक्त रचनाकार डॉ. सत्यवान सौरभ

विभिन्न विषयों के साथ–साथ खास तौर पर सम्पादकीय और दोहे लिखने की महारत के फलस्वरूप इन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान सम्मानित किया गया है। तितली है खामोश (दोहा संग्रह), कुदरत की पीर (निबंध संग्रह), यादें (ग़ज़ल संग्रह), परियों से संवाद (बाल काव्य संग्रह) और इश्यूज एंड पैन्स (अंग्रेजी निबंध संग्रह) डॉ. सौरभ की प्रमुख पुस्तकें हैं। इनके साथ–साथ सैंकड़ों पुस्तिकाओं और स्मारिकाओं का लेखन, संपादन एवं प्रकाशन कर सृजन सन्दर्भों को समृद्ध किया है। रचनाकार अपने परिवेश और संस्कार के साथ अर्जित अनुभवों से सृजन सन्दर्भों को विकसित ही नहीं करता वरन् उसे संरक्षित भी करता है। यह भाव और स्वभाव ही एक रचनाकार के सामाजिक सरोकारों को परिलक्षित करता है। इन्हीं सन्दर्भों को अपने भीतर जागृत करते हुए अपने रचनाकर्म में सतत् रूप से सक्रिय हैं हरियाणा के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और शैक्षिक नगरी और भिवानी–हिसार की धरा बड़वा गाँव के निवासी कवि, लेखक, स्वतंत्र पत्रकार और शिक्षाविद डॉ. सत्यवान सौरभ। इनका लेखन और जीवन लोगों को इस कद्र प्रेरित करते हैं कि हर कोई ये सोचने पर मजबूर हो जाता है कि विपरीत परिस्थितियों पर धैर्य से जीत हासिल की जा सकती है। सौरभ की उपलब्धियों पर उन्हें सैंकड़ों राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

रचनाकार अपने परिवेश और संस्कार के साथ अर्जित अनुभवों से सृजन सन्दर्भों को विकसित ही नहीं करता वरन् उसे संरक्षित भी करता है। यह भाव और स्वभाव ही एक रचनाकार के सामाजिक सरोकारों को परिलक्षित करता है। इन्हीं संदर्भों को अपने भीतर जागृत करते हुए अपने रचनाकर्म में सतत् रूप से सक्रिय हैं हरियाणा के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और शैक्षिक नगरी और भिवानी–हिसार की धरा बड़वा गाँव के निवासी कवि, लेखक, स्वतंत्र पत्रकार और शिक्षाविद डॉ. सत्यवान सौरभ। स्कूली दिनों से ही इनके कला, संस्कृति और साहित्यिक विचारों, व्यवहार, कार्यशैली और लेखन के साथ कुशल आयोजन और प्रबंधन को देखने दृसमझने का अवसर मिला है। सामाजिक समरसता और समन्वय को समर्पित सौरभ अपने समभाव और दृष्टिकोण से अपने सृजन कर्म और व्यवहार के प्रति सजग और चेतन होकर निरन्तर सृजन यात्रा कर रहैं हैं। सरकारी सेवा काल में सभी वर्ग के सहकर्मियों को साथ लेकर चलने एवं तनाव मुक्त वातावरण की कार्य शैली विकसित की और सतत् रूप से इसे अपने व्यवहार में संरक्षित और पल्लवित रखा। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति इनके कार्य– व्यवहार से प्रभावित रहा और आगे बढ़ने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ।

अपने कार्य–व्यवहार से इन्होंने सभी वर्ग के व्यक्तियों की हर संभव मदद की, उनकी समस्या और पीड़ा में भागीदार बने और छोटे–बड़े सभी से पूरा आदर एवं स्नेह भाव रखते हुए अपने सहज स्वभाव अनुरूप अपने कार्य को समर्पित रहे। अपने जीवन में कर्म की प्रधानता को प्रमुख मानते हुए हमेशा कर्म को ही सच्ची पूजा माना। "मन चंगा तो कठौती में गंगा" और " पूत कपूत तो क्यों धन संचय, पूत सपूत तो क्यों धन संचय" के वाक्यों को हमें जीवन का ध्येय माना। आप निरन्तर सृजनरत तो हैं ही, समाज के सभी क्षेत्रों के प्रतिभाशाली और विशेषज्ञ व्यक्तियों, महिलाओं, बच्चों इत्यादि पर लिखते समय उन्हें प्रोत्साहन देने और प्रेरित करने का भाव सदैव मन में रखते हैं। सदैव जिंदा दिल रहने की मुख्य वजह लेखन से प्राप्त ऊर्जा को मानने वाले डॉ. सौरभ निःस्वार्थ भाव से लेखन को ही अपनी पूजा, धर्म और कर्म मानते हैं।

स्कूली दिनों से ही लेखन के क्षेत्र में विभिन्न विषयों कला– संस्कृति, पुरातत्व, इतिहास, पर्यटन, सभी क्षेत्रों के विकास, , बाल विवाह , दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, नशा मुक्ति, स्वच्छता, रक्तदान , दिव्यांग कल्याण जैसे सामाजिक सरोकार और मातृभाषा हिंदी के विकास, लोकोत्सव, लोक तीर्थ, लोककलाएं, लोक देवी–देवता, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक–चित्रांकन, आंचलिक मेले आदि विभिन्न विषयों पर हजारों आलेख, फीचर, रिपोर्ताज, सफलता की कहानियाँ, साक्षात्कार, बाल आलेख और बाल कहानियां, सरल एवं सुग्राह्य भाषा शैली में निर्बाध दोहा लेखन कार्य करने वाले लेखकों तथा रचना धर्मियों में देश भर के साहित्य एवं मीडिया जगत में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।

लेखन में भी संपादकीय लेखक के रूप में आपने विशिष्ठ पहचान कायम की है। सभी विधाओं पर आपका लेखन हरियाणा तक ही सीमित नहीं रह कर देश के संदर्भ में भी व्यापक स्वरूप लिए हैं। आपके आलेख और पुस्तकें तथ्यात्मक, सूचनात्मक और शोध परक होने से शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इनकी रचनाएं बड़ी संख्या में हज़ारों सरकारी एवं गैर सरकारी पत्र–पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। इसी दौर के समाचार पत्रों में ने निरंतर आपकी रचनाओं को प्राथमिकता से प्रकाशित किया गया है। इस दौर में विभिन्न विषयों पर इनकी रचनाएं बहुतायत से प्रकाशित हुई हैं। यूएसए से प्रकाशित हिंदी–अंग्रेजी द्वि भाषी साप्ताहिक " हम हिदुस्तानी" में भी लंबे समय तक इनकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। देश के कई समाचार पत्रों में इनकी रचनाएँ निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। यही नहीं विभागीय और अन्य विभागों और संस्थाओं के पत्र–पत्रिकाओं का लेखन, संपादन और प्रकाशन भी करवाया और निजी स्तर पर पुस्तकें भी लिख कर प्रकाशित करवाई हैं । इसी समर्पण और लगन का परिणाम रहा कि आप देश भर में विख्यात लेखक के रूप में स्थापित हो गए। विभिन्न विषयों के साथ–साथ खास तौर पर सम्पादकीय और दोहे लिखने की वजह से ही इन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान से सम्मानित किया गया है।

तितली है खामोश (दोहा संग्रह), कुदरत की पीर (निबंध संग्रह), यादें (ग़ज़ल संग्रह), परियों से संवाद (बाल काव्य संग्रह) और इश्यूज एंड पैन्स (अंग्रेजी निबंध संग्रह) डॉ सौरभ की प्रमुख पुस्तकें हैं। इनके साथ–साथ सैंकड़ों पुस्तिकाओं और स्मारिकाओं का लेखन, संपादन एवं प्रकाशन कर सृजन सन्दर्भों को समृद्ध किया है। इनका लेखन और जीवन लोगों को इस कद्र प्रेरित करते हैं कि हर कोई ये सोचने पर मजबूर हो जाता है कि विपरीत परिस्थितियों पर धैर्य से जीत हासिल की जा सकती है। सौरभ की उपलब्धियों पर उन्हें सैंकड़ों राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। इंटरनेशनल ब्रिटिश अकादमी और इंटरनेशनल फॉरम ऑफ पीस अकादमी तथा वर्ल्ड पीस फेडरेशन, बांग्लादेश एवं फिलीपींस द्वारा दिनांक 19 मार्च, 2022 को यूनिवर्सिटी एंड म्यूजियम ऑफ़ द रिसर्च एंड विजडम, ढाका द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वर्चुअल प्रोग्राम में और विक्रम. शिला हिन्दी विद्यापीठ, बिहार द्वारा गाँव बड़वा, सिवानी (भिवानी) के युवा लेखक सत्यवान 'सौरभ' को उनकी शैक्षणिक, साहित्यिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यो मे अतुलनीय अनवरत योगदान के लिए डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। सौरभ, ब्रिटेन, बांग्लादेश व फिलीपींस देश द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित होने वाले हरियाणा के प्रथम व्यक्ति हैं जो कि हरियाणा सहित सम्पूर्ण भारत के लिए विशेष सम्मान की बात है। ऐसे समभाव और विचारशील लेखक डॉ. सत्यवान सौरभ का जन्म हरियाणा के भिवानी के गाँव बड़वा में 03 मार्च 1989 को पिता श्री रामकुमार रिछपाल गैदर माता कौशल्या देवी के परिवार में सबसे बड़े पुत्र के रूप में हुआ। आप चार भाई बहिन हैं। आपका विवाह प्रियंका सौरभ से 2016 में सम्पन्न हुआ। आपके प्रारंभिक जीवन का परिवेश कभी भी उत्साहवर्धक नहीं रहा, परिस्थितियां हमेशा विषम बनी रही। जीवन में उत्साह के परिवेश का उजास आपको जन्म के 22 साल बाद प्राप्त होने आरम्भ हुआ जब आपने सरकारी सेवा में प्रवेश किया और विभागीय कार्य करते हुए 2019 में राजनीति विज्ञान विषय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की तथा पीएच. डी. के लिए पंजीकरण करवाया। अन्ततः यही कि अपने आप को सृजनात्मकता में लीन करने वाले डॉ. सत्यवान सौरभ ऐसे विचारशील लेखक हैं जो सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को सतत रूप से संस्कारित, पल्लवित और संरक्षित रखने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं।

बीस फीसद लोग फोबियाग्रस्त

दुनिया में हर कोई किसी न किसी चीज से डरता है। लेकिन कभी–कभी यह डर फोबिया में तब्दील हो जाता है, जिसमें उसे बेवजह बेतहाशा किसी चीज का डर सताने लगता है. वह इस कदर "हावी हो जाता है कि रोजमर्रा की जिंदगी पर उसका असर पड़ने लगता है और उस डर पर काबू पाना मुश्किल हो जाता है। अगर ध्यान न दिया जाए, तो ये फोबिया मरीज के लिए जानलेवा भी साबित हो सकते हैं। बायोमेडिकल जर्नल पीएमसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक करीब 20 फीसदी लोग किसी न किसी तरह के फोबिया की चपेट में है। एम पावर और आदित्य बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट की फाउंडर व चेरपर्सन डॉ. नीरजा बिड़ला बताती हैं कि स्टेटिस्टा की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत की 140 आबादी किसी न किसी मानसिक समस्या की शिकार है। इनमें महिलाओं की संख्या सबसे ज्यादा है। इसकी एक बड़ी वजह बुलिंग, बचपन में हुआ सेक्शुअल एब्यूज और घरेलू हिंसा है। उनके दिल में इस कदर डर बैठ जाता है कि वे अपनी जिंदगी से निराश हताश होने लगती हैं। कोरोना के बाद बड़ी बेरोजगारी और पैसों की तंगी से भी ये परेशानियां बढ़ रही हैं।

हीमैन धर्मेन्द्र ने मनाया ड्रीमगर्ल हेमा मालिनी का 75 वां जन्म दिन

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नवरात्र के पहले दिन रविवार को नगर निगम परिसर में 233 करोड़ 20 लाख रुपये की लागत वाली 303 परियोजनाओं का लोकार्पण व शिलान्यास किया। इनमें 189 परियोजनाओं का शिलान्यास और 114 का लोकार्पण हुआ।

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com